चतुर्थ अध्याय

प्रभाकर श्रोत्रिय के नाटकों का शिल्प

4.1 'शिल्प' सैद्धांतिक विवेचन :-

साहित्य में 'शिल्प' शब्द को विशेष अर्थ प्राप्त है। उपन्यास, काव्य, नाटक आदि विधाओं की लेखन पद्धति कों लेकर इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। शिल्प अंग्रेजी के शब्द 'टेकनिक' का हिंदी अनुवाद है। इसकी परिभाषा अंग्रेंजी शब्द कोश में इन शब्दों में दी गई है - ''कलात्मक कार्यवाही की रीति जो संगीत अथवा चित्रकला में प्राप्त होती है तथा कलात्मक कारीगरी।''[1]

हिंदी कोश में शिल्प के बारे में इस प्रकार लिखा गया है - ''शिल्प से अभिप्राय हाथ से कोई वस्तु तैयार करने अथवा दस्तकारी या कारीगरी से है।''[2] इसके अलावा महेशचंद्र शर्मा शिल्प के बारे में लिखते हैं - ''रचना का उद्योपांत प्रबंध अथवा संयोजन। किसी भी रचना का आरंभ से अंत तक कौशलपूर्ण संयोजन अवस्था अथवा प्रबंध शिल्प-विधान' कहलाता है।''[3]

प्रथम दो व्याख्याओं से स्पष्ट होता है कि शिल्प वह चीज है जैसे एकाध कलाकार अपनी कलाकृति बनाते समय अनेक बातों का ध्यान रखता है फिर वह मूर्ति हो या चित्र। इस बात से स्पष्ट होता है कि किसी एक कलाकृति का प्रारंभ से अंत तक जो रूप होता है उसे शिल्प कहा जाता है। साहित्य में जिस शिल्प की बात की जाती है वह अंतिम व्याख्या से स्पष्ट हो जाता है। शर्मा जी ने अपनी व्याख्या में कहा है कि 'रचना का उद्योपांत प्रबंध अथवा संयोजन अर्थात किसी एक उपन्यास, नाटक, कथा में जितनी बातों का अंतर्भाव होता है उसे शिल्प कहा जाएगा। नाटक के निर्माण के लिए कथावस्तु, पात्र-चरित्र-चित्रण, संवाद-कथोपकथन, देशकाल-वातावरण, पात्र-चरित्र-चित्रण, संवाद-कथोपकथन, देशकाल-वातावरण, भाषाशैली तथा उद्देश्य आदि बातों की

आवश्यकता होती है अतः इन्ही के अभाव में नाटक की उत्पत्ति नहीं हो सकती। प्रस्तुत अध्याय में श्रोत्रिय जी के तीनों नाटको के शिल्प को इन्हीं तत्वों की सहायता से स्पष्ट किया गया है।

4.2 कथावस्तु

4.2.1 'इला' कथावस्तु

मानवजाति के आद्यपुरूष मनु और महाराणी श्रद्धा से संबंधित कथानक प्रस्तुत नाटक में दिखाई देता है। मनु पुत्रप्राप्ति की अभिलाषा से मुनि वशिष्ठ जी की सहायता से पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाते है। पुत्रकामेष्टि यज्ञ अक्सर पुत्र की प्राप्ति के लिए किया जाता है इस बात से महाराणी श्रद्धा अपरिचित थी। पुत्रकामेष्टि यज्ञ में वशिष्ठ जी को मदद करनेवाला उनका शिष्य विद्याधर श्रद्धा की इच्छा के अनुसार पुत्री के लिए मंत्रोच्चार करता है। यज्ञ के अनुसार श्रद्धा को पुत्री प्राप्त होती है। मनु को जब इस बात का पता चल जाता है तब वे आश्चर्यविभोर हो जाते हैं।

मनु वशिष्ठ मुनि को आमंत्रित कर पूरी घटना बता देते हैं। वशिष्ठ मुनि विद्याधर से बातें कर यज्ञ के विपरीत परिणाम के कारण जान लेते हैं। मनु को पता चलता है कि श्रद्धा की इच्छा के कारण उन्हें पुत्र की अपेक्षा पुत्री की प्राप्ति हुई है तब मनु श्रद्धा को कोसते रहते हैं। मनु वशिष्ठ मुनि से पुत्री को पुत्र में परिवर्तित करने की याचना करते हैं। वशिष्ठ मुनि न चाहते हुए भी यही अघोरी कृत्य करते हैं।

'इला' का परिवर्तन पुत्र में किया जाता है। उसका नामकरण 'सुद्युम्न' किया जाता है। सुद्युम्न जैसे-जैसे बड़ा होता गया वैसे-वैसे उसके शरीर में स्त्रियोचित गुणों का विकास होता गया। राजकुमारी सुमति से उसका विवाह कर दिया जाता है। एक बार वह शिकार के लिए शरवण नामक जंगल में जाता है तब वहाँ उसका शरीर मृदु और स्त्रियोचित होता गया और उसका परिवर्तन एक स्त्री में हो गया उसी वन से मार्गक्रमण करते समय चंद्रपुत्र बुध उसे देख लेता है और उससे मिलकर उसके साथ विवाह कर लेता है। इला और बुध के संयोग से उन्हें पुत्र की प्राप्ति होती है। उधर राजमहल में मनु पाँच सालों से सुद्युम्न की खोज में लगा हुआ है। सुद्युम्न की पत्नी सुमति मनु से बहस करती रहती है। वशिष्ठ मुनि इला को देखकर उसे अपने आश्रम में ले जाकर उसे सुद्युम्न में परिवर्तित कर देते हैं। सुद्युम्न जब वापस चला जाता है तब सारे राज्य की परिस्थितियाँ बदल चूकी थी। सुद्युम्न राजदरबार में कुछ दिन कड़ा रूख अपनाता है तो दस-पंद्रह दिन स्वयं को राजमहलों में कैद कर लेता है। सुद्युम्न के इस प्रकार के व्यवहार से लोग आशंकित हो जाते हैं। अंत में वशिष्ठ मुनि इला और बुध से उत्पन्न 'पुरूरवा' का राज्याभिषेक करवाते हैं और मनु तपस्या के लिए वन में चला जाता है।

4.2.2 'साँच कहूँ तो' कथावस्तु

'साँच कहूँ तो' यह नाटक मध्यकालीन राज्य-व्यवस्था से संबंधित है। नाटककार श्रोत्रिय जी ने राजस्थानी में लिखे काव्य 'बीसलदेव रासो' को इस कथा का आधार बनाया है। राजा भोज और भानुमती की पुत्री राजमती का विवाह कम उम्र में ही मारवाड़ के राजा बीसलदेव के साथ किया जाता है। बीसलदेव ने इससे पहले भी इंद्रावती नामक राणी से विवाह किया था। बीसलदेव किशोरी राजमती के साथ कामुक क्रिडाए करने लगता है मगर राजमती उसे फटकारती है वह बीसलदेव जैसे राजा से भी नहीं डरती। उसका व्यक्तित्व निड़र है। इसी निड़रता के कारण वह बीसलदेव के अहं को ठेस पहुँचाती है और बीसलदेव को उड़ीसा देस के राजा से कम आँकती है। वह राजा से कहती है कि उड़ीसा के राजा के पास हीरें हैं पर तुम्हारे पास नमक। राजा बीसल का स्वाभिमान जागृत होता है और वह बारह बरस तक वापस न आने का प्रण करता है। उड़ीसा जाकर उड़ीसा नरेश के पास से हीरे लेकर वापस आने का भी प्रण करता है। राजमती बीसलदेव का यह दृढ़संकल्प देखकर घबरा जाती है। वह बीसलदेव को रोकने का प्रयास करती है। आखिरकार बीसलदेव इंद्रावती, राजमती तथा पूरे राज्य को छोड़कर उड़ीसा की ओर चला जाता है।

राजमती बीसलदेव के वियोग में तड़पती रहती है। वह अब युवती हुई है। पति वियोग के कारण वह अस्थि पंजर हुई है। उसकी यह अवस्था देखकर राजमती की मामीसा कुटनी उसे किसी दूसरे मर्द के साथ रातें गुजारने की सलाह देती है। राजमती उसे मारकर भगाती है। राजमती अपने राज्य के पंडित को उड़ीसा की ओर भेज देती है। पंडित जी उड़ीसा राज्य में जाकर बीसलदेव को पहचानते हैं मगर सबके सामने नहीं। दूसरी जगह में जाकर राजमती का विरह एवं पूरे राज्य की परिस्थिति का विवरण करते हैं। बीसलदेव को इस बात पर विश्वास नहीं होता कि राजमती जैसी नारी पति विरह में कैसे पागल हो सकती है ? पंडित जी बीसलदेव को वापस आने की बिनती करते है। बीसलदेव उड़ीसा नरेश से अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं। उड़ीसा की महाराणी उसे वापस न जाने की बिनती करती है। उड़ीसा नरेश बीसलदेव को चारसों उंटो के साथ हीरे भेज देता है और बीसलदेव से बिनती करता है कि इन्हीं उटों पर नमक भेज दों। बीसलदेव वहाँ से अपने राज्य की ओर वापस आता है। वापस आकर राजमती को गले से लगाता है।

4.2.3 'फिर से जहाँपनाह' कथावस्तु

'फिर से जहाँपनाह' की कथावस्तु मध्यकालीन राजव्यवस्था एवं ईक्कीसवीं सदी के लोकतंत्र को आधार बनाया गया है। प्रस्तुत नाटक में दो अंक हैं। पहले अंक में ईक्कीसवीं सदी के लोकतंत्र का तथा दूसरे अंक में अठारहवीं सदी की राज्य-व्यवस्था का चित्रण किया है।

कबीर नामक आदमी प्रस्तुत नाटक का सूत्रधार है। वह आम आदमी के दर्द को पेश करता है साथ ही साथ राजनीतिज्ञों पर कड़ा प्रहार करता है। अनंत चक्रवर्ती लोकतंत्र के मुखिया हैं। चक्रवर्ती की सरकार में मिस्टर वर्मा ग्रह-वित्त-मंत्री हैं। गुणगाण सचिव हैं। त्यागमूर्ति धन धंदा कमिशन मंत्री है। मंगलम राष्ट्रीय कारावास ग्रह का प्रमुख है। अब्दुल्ला विद्रोही पार्टी का एक नेता है, वसुंधरा भी विद्रोही पार्टी की नेता है। चक्रवर्ती का मंत्रिमंडल चक्रवर्ती की तरह भ्रष्ट एवं अयोग्य है। चक्रवर्ती सब मंत्रियों पर अपना वर्चस्व रखना चाहता है। अगले चुनाओं में वह जीत हासिल करना चाहता है उसके लिए कुछ भी करने के लिए ऊतारू है। वह अपने विरोध में लिख रहे 'समय सारथी' नामक अखबार पर पाबंदी लगाता है। वर्मा जैसे नेक मंत्री का मंत्रीपद छिनना चाहते है। वर्मा ने जो बजट बनाया था वह उद्योजकों के विरोध में था इसी कारण वे उसे नामंजुर कर दते हैं। अपनी स्टेनो जुही के साथ नाजायज संबंध रखते है और उसका कत्ल कर देते हैं। कश्यप जैसे ईमानदार नेता का कत्ल करवा देते हैं। इस प्रकार चक्रवर्ती कुर्सी के लिए कुछ भी करने के लिए उतारू है। विलियम, कौशिक देशपांडे, असलम जैसे पत्रकार चक्रवर्ती की पोल खोल देते हैं आखिर उस पर बलात्कार एवं कत्ल का इल्जाम लगाया जाता है फिर भी उसमें उसे निर्दोष ठहराया जाता है।

दूसरे अंक में मध्यकालीन राज्य-व्यवस्था का चित्रण दिखाई देता है। आदमशाह बादशाह है, मलिका-ए-आलिया महाराणी है, शफीखान आदमशाह के सलाहकार है। असदुल्ला सिपहसालार है, मंगलसिंह वजीरे आजम है, नूरशाह आदमशाह के भाई हैं, कासिम खान दारोगा है। इस प्रकार आदमशाह का मंत्री मंडल है। आदमशाह दरबार में बूरे और गुनहगारों को बेकसूर और बेकसूरों गुनहगार ठहराते हैं। गुप्तचर अधिकारी उन्हें बता देता है कि पडोस के तीनों राज्य इकठ्ठा होकर आप पर आक्रमण करनेवाले है। यह बात सुनकर आदमशाह सिपहसालार असदुल्ला को बुलाकर उन्हें युद्ध के लिए भेज देते हैं। आदमशाह अपनी पत्नी के चचाजान और राजापुर के युवराज इम्तियाज को खत्म करने के हुक्म देते है। मगर मंगलसिंह उन्हें हिफाजत से रखते हैं। दरबार में ''जुगनू'' नामक भाट कवि हैं जो आदमशाह के चहीते हैं। आदमशाह असदुल्ला से जलते रहते हैं। नूरशाह की ओर भी आशंकित होकर देखते हैं। आदमशाह की पत्नी राज्य की समस्याओं निराकरण करने के लिए किसी एक आदमी मतलब नूरशाह को नियुकत करना चाहती हैं। आदमशाह इसपर क्रोधीत हो जाते हैं। आदमशाह सईदा जैसी नृत्यांगना से ईश्क लड़ाते रहते हैं। अपनी पत्नी के सामने भी लज्जीत नहीं होते। मलिका-ए-आलिया को यह खबर लग जाती है कि अपने चचाजान और राजापुर के युवराज की युद्ध में मौत हो गई। इसके कारण वह दुःखी हो जाती हैं। मगर मंगलसिंह अजीबोगरीब तरीके से उनकी रूहों से मलिका ए-आलिया को मिला देता है। अंत में सब मंत्रीगण एक होकर नूरशाह को बादशाह करार देते हैं और आदमशाह जैसे भ्रष्ट एवं कपटी राजा को कैद किया जाता है। इन दो कथानकों के आधार पर लेखक यह स्पष्ट करना चाहते

है कि सत्ताधारी बदलने से उनकी आदतें नहीं बदल सकती। हर सत्ताधारी पहले जैसा ही होता है सिर्फ नाम बदले जाते हैं।

4.3.1 चरित्र चित्रण (इला)

4.3.1.1 मनु

मनु को मानव जाति के आदि पुरूष के रूप में जाना जाता है। मनु एक राजा थे। राजा सर्व सत्ता का अधिकारी होता है। मनु भी सर्व सत्ता के अधिकारी थे। प्रस्तुत नाटक में मनु एक राजा के साथ पिता, पति एवं एक धर्मरक्षक राजा की भूमिकाएँ निभाते हैं।

सबसे पहले श्रोत्रिय जी ने मनु को एक राजा के रूप में चित्रित किया है। राजा का कर्तव्य होता है कि अपनी प्रजा का रक्षण एवं भरण-पोषण करें, सारे राज्य की व्यवस्था ठीक रूप से चलाए। मनु ये सारी भूमिकाएँ प्रस्तुत नाटक में बखूबी निभाते हैं। राजा को धर्म और राजनीति का पालन कठोरता से करना पड़ता है। इसी कारण मनु को पुत्री की अपेक्षा पुत्र की आवश्यकता महसूस होती है। राजा का पुत्र आखिरकार राजपुत्र होता है आगे चलकर राज्य की रक्षा करने का कार्य उसे करना पड़ता है। इसी कारण मनु वशिष्ठ जी से फिर से पुत्र कामेष्ठि यज्ञ करवाते हैं। मनु वशिष्ठ जी से पुत्री का परिवर्तन पुत्र में करने की बिनती करते हैं - "गुरूदेव ! आप चाहें तो पुत्री को पुत्र में बदल सकते हैं।"[4] इला का रूपांतर सुद्युम्न नामक पुत्र में करवाते हैं।

मनु एक राजा के साथ पिता भी है। पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा से उन्होने राजगुरू वशिष्ठ जी की सहायता से पुत्रकामेष्ठि यज्ञ करवाया परंतु यज्ञ का फल बिल्कुल विपरीत निकला। पुत्र की अपेक्षा उन्हे इला नामक सुंदर कन्या की प्राप्ति हुई। मनु इससे निराश हो जाते हैं। मनु यज्ञ के विपरीत फल के कारण वशिष्ठ जी को फटकारते हैं और आखीरकार उन्हीं की मदद से उसी इला का रूपांतर एक पुत्र सुद्युम्न में कर देते हैं। सुद्युम्न जब बड़ा हो जाता है तब उसे युद्ध की शिक्षा दिलवाने का प्रबंध करते हैं मगर सुद्युम्न का मन युद्ध की अपेक्षा फूल और पंछियों में जादा लगा रहता है। यह बात मनु के मन को ठेस पहुँचाती है। वे चिंतीत होते हैं। सुद्युम्न जब राजा बन जाता है तब पाँच साल तक राज्य में वापस नहीं आता ऐसे में उनको अपने बेटे की फिक्र रहती है।

राजा मनु सर्व सत्ता के अधिकारी हैं। इसी कारण वे राजगुरू जैसे बुजूर्ग व्यक्ति से भी प्रकृति की इच्छा के विरूध्द कृत्य करवाते हैं। पुत्रकामेष्ठि यज्ञ के प्रतिकुल परिणाम के कारण मनु वशिष्ठ जी से फिर से यज्ञ करवाकर इला का रूपांतर सुद्युम्न नामक पुत्र में करवा देते हैं। मनु लिंग-परिवर्तन जैसा भयंकर अपराध वशिष्ठ जी से करवाते हैं। वशिष्ठ मुनि मनु के आदेश को मानकर पुत्री का रूपांतर पुत्र में करते हैं।

मनु के दो रूप हैं। एक सर्व परिचित राजा का रूप जो बाहरी तौर पर सबको दिखाई देता है और दूसरा

जो किसी को न दिखाई देनेवाला रूप। श्रद्धा और राजगुरू वशिष्ठ को राजा का कठोर प्रशासक का यह असली रूप दिखाई देता है।

इस प्रकार मनु इस नाटक के प्रमुख पात्रों में से एक हैं जो नाटक में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वह एक सर्वशक्तिमान राजा, एक पिता, सर्व सत्ता के अधिकारी एवं कठोर प्रशासक के रूप में पाठकों के सामने आते हैं।

4.3.1.2 श्रद्धा

श्रद्धा मनु की पत्नी एवं महाराणी के रूप में पाठकों के सामने आती है। वह मनु की सही रूप में अर्धांगिनी है। महारानी होने के कारण उसे भी अधिकार प्राप्त हैं पर पूरे नाटक में ऐसा कहीं प्रतीत नहीं होता कि श्रद्धा ने अपने अधिकारों का गलत उपयोग किया है।

श्रद्धा एक महारानी होकर सामान्य नारी की तरह बर्ताव करती है। उसकी सेवा के लिए महल में अनेक दासियाँ हैं मगर वह उन पर रोब नहीं जमाती। एक सामान्य नारी की तरह उसे पुत्र की लालसा है। एक स्त्री होने के कारण उसे बच्चे के रूप में बालिका ही अच्छी लगती है। मनु हमेंशा लड़कियों से ही प्रेम करते हैं। यहाँ पर श्रद्धा का भोलापन प्रकट होता है। उसे महाराज के असली रूप की पहचान नहीं है।

महारानी श्रद्धा महाराज मनु के अघोरी कृत्य में अनिच्छा से शामील होती है। श्रद्धा वशिष्ठ जी से अपनी अनिच्छा व्यक्त करती है - "भगवान् सबका मंगल करेंगे गुरूदेव-सिवा इस अभागिनी श्रद्धा के!"[5] जब महारानी श्रद्धा मनु का असली रूप जानती है तो उसे विश्वास ही नहीं होता कि महाराज मनु इतने क्रूर कैसे हो सकते हैं ? महाराज मनु इला को एक लड़के के रूप में परिवर्तित करवाने का आदेश राजगुरू वशिष्ठ जी को देते हैं। राजगुरू को यह बात बिल्कुल पसंद नहीं है। वह मनु से बहस करते हैं फिर भी उन्हें राजादेश को मानना ही पड़ता है। श्रद्धा को जब यह बात मालूम होती है तो वह आश्चर्यविभोर हो जाती है। उसे भी इस जाल में फँसाया जाता है।

श्रद्धा एक महाराणी होने पर भी एक माँ है। अपने बेटे सुद्युम्न की सारी चिंताओं का ज्ञान श्रद्धा को है। सुद्युम्न असल में पुरूष नहीं है, उसका बाहरी रूप पुरूष का है और उसका अंतरंग नारी का है इसीलिए वह युद्ध की अपेक्षा उद्यानों में फूलों और पंछियों के आस-पास रहता है। उसे युद्ध कला सीखने में कोई दिलचस्पी नहीं है इस बात को श्रद्धा महसूस करती है। उसे सुद्युम्न के मन की हर बात पता है। सुद्युम्न जब राजा बनता है, तब उसे इसी समस्या से जूझना पड़ता है उस समय श्रद्धा हमेशा चिंतित रहती है।

इस प्रकार श्रद्धा इस नाटक की नायिका तो नहीं है लेकिन प्रमुख नारी पात्रों में से एक हैं। नारी की विडंबनाओं की प्रतीक है।

4.3.1.3 इला

'इला' प्रस्तुत नाटक की नायिका है। यह नाटक नायिका प्रधान नाटक है। सदियों से स्त्री पर अन्याय एवं अत्याचार होता आया है। उसके खिलाफ आवाज उठाने का काम नाटककार ने इस नाटक में किया है।

इला इस नाटक की प्रमुख नारी पात्र है। नाटक का नामकरन भी यही है। 'इला' ऐसी स्त्री है जो स्त्री होकर भी स्त्री जैसा व्यवहार नहीं कर सकती क्योंकि उसे राजगुरू वशिष्ठ अपने तपोबल के आधारपर पुरूष में बदल देते हैं। इला को इस घिनौनी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। इस समय उसे असहनीय यातनाओं से गुजरना पड़ता है फिर भी वह इन यातनाओं को सहकर जीवित रहती है। इसी इला का रूपांतर वशिष्ठ मुनि सुद्युम्न में कराते हैं और सुद्युम्न हर पंद्रह दिनों बाद इला में बदल जाता है।

इला अत्यंत सुंदर रूपवती राजकुमारी थी। वह साक्षात सरस्वती देवी जैसी प्रतीत होती थी। उसके मन में कोमल भाव विद्यमान रहते थे। जब इला सुद्युम्न में बदल जाती है तब भी उसके मनमें यही भाव विद्यमान रहते थे। सुद्युम्न हमेशा उद्यानों में फूलों और पंछियों के पीछे लगा रहता है। युद्ध के बजाय उसे शांती प्रिय है। युद्ध कला अवगत करते समय वह उदास रहता है। किसी हिरन को मारते समय उसके हाथ काँपते हैं।

इला अपने पिता मुन की हवस का शिकार बन जाती है। पुत्र प्रेम के कारण मनु उसका लिंग-परिवर्तन करा देते हैं। मगर यह श्रद्धा की इच्छा के विरूद्ध होने के कारण सुद्युम्न में नारी के अंश रह जाते हैं, यज्ञ ठीक से नहीं होता। इला जब निष्पाप बालिका थी तब उसे इस प्रकार के घिनौने कृत्य से गुजरना पड़ता है। उसे जन्म से ही ऐसी भयानक यातनाओं का सामना करना पड़ता है। यह बात वशिष्ठ जी के कथन से स्पष्ट हो जाती है - ''औषध और मांत्रिक क्रियाएँ सभी तो चल रही हैं। बाल-शरीर में शुक्राणुओं के अनुपात लगभग बदल गए हैं ... परंतु मैं अंतर्दृष्टि से स्पष्ट अमंगल देख रहा हूँ।''[6] उसका शरीर पुरूष का और मन स्त्री का रहता था। जब आमावस्या आती थी तब सुद्युम्न राज्य में कठोरता से राजकारोबात करता था। कठोर शासन करता था। लोग उससे ड़रते थे और जब पूर्णिमा आती थी तब वह एक स्त्री की तरह व्यवहार करता था। जब तक स्त्रीत्व उसमें बाकी रहता तब तक वह अपने आपको राजमहलों में कैद कर लेता था।

इला अनेक रूपों में पाठकों के सामने आती है। जब इला का परिवर्तन सुद्युम्न में होता है तब शरीर पुरूष का और मन स्त्री का ऐसी उसकी अवस्था बन जाती है। सुद्युम्न की अवस्था उसके स्वगत से स्पष्ट हो जाती है - ''भीतर दो भाव दो व्यक्तित्व झगड़ते रहते हैं वह तो जानता हूँ.... । अनुभव करता हूँ तात.....पर भीतर कुछ और बाहर कुछ.....बड़ी कठोर साधना करनी पड़ती होगी न, इसके लिए ! अपने आपको दिया जाने वाला यह दंड.....ओह ....कितनी निर्मम है सत्ता.....! मैं तो चाहता हूँ कि मनुष्य का मुख, मन का

दर्पण हो क्या आपको मेरे हृदय की हलचल मुँह पर नहीं दिखाई देती ?''[7] सुद्युम्न हमेशा निराश और स्तब्ध रहता है। उसकी राजव्यवस्था में अनास्था मनु को सताती है। सुद्युम्न जब राजा बनता है तब शरवण वन में जाने के कारण फिर इला में परिवर्तित हो जाता है। तब उसकी भेंट चंद्र के पुत्र बुध से हो जाती है और थोडे ही दिनों में उनका मिलन हो जाता है। नियति इतने सारे खेल अकेली इला के साथ खेलती है।

इला ऐसी नारी है जिसका दुःख कोई नहीं समझ सकता। पूरी व्यवस्था उसको एक खिलौने की तरह इस्तेमाल करती है। उसे सिर्फ भूमिका निभानी पड़ती है। वह व्यवस्था से शोषित है। श्रद्धा के अलावा असल में उसको कोई समझ नहीं सकता। अतः इला प्रस्तुत नाटक की नायिका होकर भी एक शोषित नारी है, उसका इस्तमाल किया जाता है लेकिन वह व्यवस्था को धोखा देती है। पुरूष का रूप ओढकर उसमें नारी संचार करती है। अतः नाटककार श्रोत्रिय जी ने इला के चरित्र की विडंबनाओं को सफलता से चित्रित किया है।

4.3.1.4 राजगुरू वशिष्ठ

राजगुरू वशिष्ठ मनु के दरबार में एक पुरोहित की भूमिका निभाते हैं इनके पास तपोबल के कारण प्राप्त हुई शक्तियाँ हैं। राजगुरू वशिष्ठ भारतीय संस्कृति के सच्चे पालनकर्ता हैं। राजा मनु राजगुरू वशिष्ठ मुनि का पर्याप्त सम्मान करते हैं। उन्हें एक बुजूर्ग के रूप में मानते हैं।

वशिष्ठ मुनि एक सच्चे राजगुरू की भूमिका निभाते हैं। राजा मनु पुत्र की अभिलाषा के कारण उनकी सहायता से पुत्रकामेष्टि यज्ञ की तैयारी करते हैं। राजा की इच्छानुसार राजगुरू पुत्र कामेष्टि यज्ञ की तैयारी करते हैं और उसे सफलता से अंतिम रूप देते हैं पुत्रकामेष्टि यज्ञ के बाद पूरे राज्य में आनंदोत्सव मनाया जाता है और इसी बीच राजा मनु को पता चलता है कि पुत्र की अपेक्षा पुत्री का जन्म हुआ है। राजा क्रोधित होते हैं। मनु राजगुरू वशिष्ठ के पास जाकर उन्हें यज्ञ फिर से करवाने की प्रार्थना करते हैं। मगर उसकी यह प्रार्थना राजगुरू के मन को ठेस पहुँचाती है। मनु पुत्री को पुत्र में बदलने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं। वशिष्ठ मुनि सबसे पहले आश्चर्य व्यक्त करते हैं मगर बाद में लिंगपरिवर्तन जैसा कठिन कार्य पूरा करते हैं।

राजगुरू वशिष्ठ एक ऋषी हैं। एक साधक के पास जो गुण होने चाहिए वे सब उनके पास है। उन्हें धर्म, संस्कृति, नैतिकता आदि बातों की फिक्र रहती है। वे हमेशा राजा मनु का मार्गदर्शन करते रहते हैं। राजा जब इला को पुत्र (सुद्युम्न) में बदलना चाहते हैं तब उन्हें उसे और नैतिकता की बाते सुनाते हैं। उनके पास अनेक शक्तियाँ हैं फिर भी वे उनका गलत इस्तमाल नहीं करते।

राजगुरू वशिष्ठ एक क्षमाशील व्यक्ति हैं। जब पुत्रकामेष्टि यज्ञ के दरम्यान विद्याधर द्वारा गलत मंत्र का उच्चारण होता है और उसी के परिणामस्वरूप श्रद्धा को पुत्र की अपेक्षा पुत्री प्राप्त होती है तब राजगुरू विद्याधर

पर नहीं गरजते वशिष्ठ जी के कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है - ''तो, यह है वास्तविकता ! तात विद्याधर, तुम्हारा कोई अपराध नहीं।''[8] उसकी बात सुनने के बाद उसे क्षमा कर देते हैं। यहाँ पर उनका क्षमाशील स्वभाव दिखाई देता है।

वशिष्ठ मुनि एक जिम्मेदार इन्सान हैं। राजा मनु को सही-गलत बताना उनका असली काम है। राजा को प्रजा के साथ किस-प्रकार का व्यवहार करना चाहिए इसका सही मार्गदर्शन राजगुरू वशिष्ठ करते हैं। जब मनु उन्हें आदेश देते हैं तब उसे वह ठुकराते हैं और बताते हैं कि तुम्हारे आश्रय की मुझ जैसे साधक को आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार वें एक स्वाभिमानी व्यक्ति भी हैं। अतः राजगुरू एक तेजस्वी ऋषी, एक क्षमाशील व्यक्ति, जिम्मेदार इन्सान और स्वाभिमानी व्यक्ति के रूप में पाठकों के सामने आते हैं।

4.3.1.5 सुद्युम्न

राजगुरू वशिष्ठ अपने तपोबल से इला का लिंगपरिवर्तन करके उसको (सुद्युम्न) पुत्र में बदल देते हैं। यौन परिवर्तन की इस प्रक्रिया में राजगुरू वशिष्ठ को सफलता मिलती है परंतु प्रकृति उसमें हस्तक्षेप करती है। यौन परिवर्तन यह घटना वास्तविक रूप से प्रकृति के विरोध में है। इला की माता और मनु की पत्नी श्रद्धा की इच्छा के विरूद्ध यह यौन परिवर्तन होता है। इसी कारण सुद्युम्न में स्त्रीयोचित गुण वास करते हैं।

सुद्युम्न पुरूष होकर भी एक नारी जैसा व्यवहार करता है। उसको आखेट के अलावा उद्यानों में घूमना अच्छा लगता है। उसको तलवार की अपेक्षा फूल अच्छे लगते हैं। सुद्युम्न के कथन से यह बात स्पष्ट होती है - ''मैं क्या करूँ माँ ? जाने क्या हो जाता है मुझे ? मन चाहता है, धनुष-बाण फेंककर फूलों से खेलूँ, लताओं में बतियाऊँ (अभिनय सहित) हवाओं में उड़ूँ।''[9] किसी जानवर का शिकार करते समय उसके हाथ काँपने लगते हैं। मनु उसकी यह अवस्था देखकर चिंतित हो जाता है मनु राजगुरू वशिष्ठ के आग्रह के कारण सुद्युम्न का राज्यभिषेक करके उसका विवाह राजा धर्मदेव की पुत्रि सुमति से कर देते हैं।

सुद्युम्न के व्यक्तित्व में प्रकृति के दखलअंदाजी के कारण हमेशा परिवर्तन होता रहता है। हर पंद्रह दिनों के बाद उसका शरीर और मन स्त्रीथोचित व्यवहार करने लगता है। जब उसकी यह अवस्था बन जाती है तब वह अपने-आपको राजमहलों में कैद करा लेता है। जब यह प्रभाव कम होता है तभी सुद्युम्न प्रजा के सामने आता है।

सुद्युम्न एक शासक के रूप में असफल रहता है। उसकी छूपने की प्रवृत्ति के कारण वह राज्य के कर्मचारियों और मंत्रियों पर नियंत्रण नहीं रख सकता। राजा के इसी स्वभाव का गलत फायदा ये लोग उठाते हैं। सभी कर्मचारी भ्रष्ट बनते हैं। जब राजा पंद्रह दिनों के बाद दरबार में आता है और अत्यंत कठोर शासक बन जाता है

तब प्रजा उससे काँपने लगती है। अचानक राजा का स्वभाव इतना क्यों बदल जाता है ? इस बात का आश्चर्य कर्मचारियों को भी होता है।

सुद्युम्न अपने आपको स्त्री और पुरूष दोनों रूपों में पाता है। जब अपने साथियों के साथ वह आखेट पर निकलता है उस समय गलत दिशा की ओर जाने के कारण वह शरवण नामक वन में प्रवेश करता है। शरवण में जाने के बाद वह महसूस करता है कि उसका सारा शरीर ठंडा पड़ रहा है, उसकी सारी भावनाएँ भी कोमल बन रहीं है। अंत में वह एक स्त्री में बदल जाता है। स्वयं को स्त्री के रूप में पाकर वह आश्चर्यविभोर हो जाता है। ऐसी अवस्था में उसकी भेंट चंद्र के पुत्र बुध से हो जाती है और वे दोनों एक रहने लगते हैं। बुध से इला को पुरूरवा नामक पुत्र की प्राती होती है। इला वशिष्ठ जी के आश्रम में जाती है वहाँ उसका रूपांतर सुद्युम्न में हो जाता है।

सुद्युम्न अपने आपको आधा पुरूष महसूस करता है। उसके मन में आशंका और आत्महीनता का भाव बढ़ जाता है। ऐसे समय में सुमति उसके अंदर नवीन आवेश भर देती है। उसको राज्य चलाने के लिए प्रेरित करती है। तभी वह ठीक तरह से राज्य चलाने का प्रयास करता है।

इस प्रकार सुद्युम्न प्रकृति से प्रताड़ित पुरूष भी और स्त्री भी है तथा एक असफल राजा एवं एक आधा पुरूष है।

4.3.1.6 सुमति

सुमति राजा धर्मदेव की पुत्री और मनु के पुत्र सुद्युम्न की पत्नी है। जब पहली बार अपने पति से मिलती है तब वह असंमजस में दिखाई देता है। तब सुमति उसे उनके अधिकार एवं कर्तव्यों से परिचित कराती है। वह सुद्युम्न से कहती है -"लेकिन आप सम्राट हैं। आपको ही सारी विपत्तियों के आगे खड़े होकर अपनी प्रजा को बचाना है। कब तक माँ के आँचल में मुँह छिपाना चाहेंगे ? मुझे ही देखिए। क्या मैं अपने माता-पिता को छोड़कर नहीं आई हूँ ? स्त्री होकर भी मैं आपकी तरह माँ-माँ नहीं पुकारती।"[10]

सुमति अपने पति सुद्युम्न के चिंताशील व्यक्तित्व के कारण स्वयं भी चिंचित रहती है। विवाह होने के के बाद कुछ ही दिनों में उसको पता चलता है की राजा सुद्युम्न किसी चिंता में हमेशा खोया रहता है। उसमें वीरता की कमी है यह बात उसको महसूस होती है। सुमति इसी कारण राजा से बहस करती रहती है। एक राजा को अपनी माँ के आँचल में न बैठकर राजकारोबार संभालना चाहिए इस प्रकार की उसकी इच्छा रहती है।

सुमति को पाँच सालों तक सुद्युम्न का विरह सहन करना पड़ता है। सुद्युम्न अपने साथियों के साथ शिकार करने हेतु वन में जाता है। दिशा भूल जाने के कारण वह शरवण नामक वन में प्रवेश करता है और उसका परिवर्तन एक स्त्री में होता है। यहाँ पर उसकी भेंट बुध से हो जाती है और बुध के साथ इतने समय तक सुद्युम्न

इला के रूप में रहता है। ऐसे समय में पीछे सुमति को पति विरह के कारण ठीक से नींद भी नहीं आती है। सुमति मनु से राजकारोबार को लेकर बहस भी करती रहती है।

सुमति स्वभाव से स्पष्ट एवं साफ है। श्रद्धा से वह सुद्युम्न को लेकर हमेशा बहस करती है। वह कहती है कि एक राजा को मैं अपने पैरों पर खड़े एक वीर और आत्मनिर्भर सम्राट के रूप में देखना चाहती हूँ, जब कि आप उसे अपने आँचल में छिपाकर लगातार कायर बना रही है। इस प्रकार सुमति एक आदर्श पत्नी, विरह से पीड़ित राणी तथा अपनी बात को निर्भयता के साथ स्पष्ट रूप में कहनेवाली नारी है।

4.3.1.7 **विद्याधर**

राजगुरू वशिष्ठ जी के शिष्य के रूप में विद्याधर का चित्रण प्रस्तुत नाटक में हुआ है। विद्याधर वशिष्ठ जी को पुत्रकामेष्ठि यज्ञ में सहायता करता है।

विद्याधर एक सच्चा शिष्य है। वशिष्ठ जी के आदेशानुसार वह पुत्रकामेष्ठि से पहले माता की इच्छा जानकर ही मंत्र जाप करता है। श्रद्धा ने पुत्रकामेष्ठि के वक्त पुत्री की इच्छा व्यक्त की थी इसी कारण उसे पुत्र की अपेक्षा पुत्री प्राप्त होती है। यह पूरी घटना विद्याधर वशिष्ठ जी को बता देता है।

विद्याधर अपने आपको दोषी मानता है। विद्याधर यह बात स्वीकार करता है - "प्रिय सुद्युम्न, सचमुच तुम्हारे साथ भयंकर खिलवाड़ हुआ है। कहीं - न - कहीं मैं भी दोषी हूँ इसका।"[11] इला का परिवर्तन सुद्युम्न में करते समय विद्याधर भी उस विधि में शामील था इसलिए वह अपने आपको इला का दोषी मानता है। सुद्युम्न जब राजा बनता है तब वह यह पूरी घटना उसे बता देता है। इस प्रकार विद्याधर सिर्फ एक शिष्य न होकर एक सच्चा इन्सान भी है।

4.3.1.8 **अरूंधती**

अरूंधती राजगुरू वशिष्ठ मुनि की पत्नी है। वह वशिष्ठ जी को हमेशा सहारा देने का प्रयास करती रहती है। राजगुरू वशिष्ठ जी को लिंग-परिवर्तन की भयानक प्रक्रिया देखकर निराशा हुई थी। पृथ्वी पर इससे पहले ऐसा क्रुर कृत्य कभी घटित नहीं हुआ था ऐसे में अरूंधती उन्हें मानसिक आधार देती है।

अरूंधती वशिष्ठ मुनि को अपने कर्तव्यों से परिचित कराती है। वशिष्ठ मुनि जब लिंग-परिवर्तन के बाद पश्चात्ताप व्यक्त करते हैं तब वह उन्हें फटकारती भी है। उसका मानना है कि राजगुरू का काम होता है राजा का मार्गदर्शन करना न कि राजा का आदेश मानना। इस प्रकार अरूंधती एक पत्नी और राजगुरू की पथदर्शिका है।

4.3.1.9 चंद्रिका

चंद्रिका महारानी श्रद्धा की चहेती दासी है। महाराज मनु भी महाराणी की चहेती दासी होने के कारण उस पर विश्वास करते हैं।

श्रद्धा को एक तेजस्वी पुत्री की प्राप्ति होने की खबर चंद्रिका सबसे पहले महाराज मनु को देती है। यह खबर सुनकर वे अचंभीत बन जाते हैं और चंद्रिका को महाराणी को महल से बाहर न जाने का और दूसरे किसी व्यक्ति को अंदर न आने का आदेश देते हैं। चंद्रिका इस कारण दुविधा में पड़ जाती है। वह महारानी पर नजर रखने का काम ईमानदारी से करती है।

चंद्रिका एक ईमानदार सेविका है। वह मनु महाराज के आदेश के मुताबिक उसका पालन करती है और महाराणी के सामने मुँह नहीं खोलती।

इसके अलावा गौण पात्रों में महामंत्री प्रमुख है जो राजा सुद्युम्न को हमेशा सलाह देने का काम करते हैं। महामंत्री वृद्ध है फिर भी राज्य की व्यवस्था रखते हैं।

दंडधारी अधिकारों का गलत इस्तमाल करता नजर आता है। दोषी व्यक्ति को दोषी ठहराने का काम न्यायाधीश का होता है। पर दंडधारी राजा सुद्युम्न के आने से अपना कर्तव्य भूल गया है। वह आम जनता को त्रस्त करता रहता है।

प्रधान न्यायाधीश न्यायदान करने का काम ईमानदारी से करते हैं। एक औरत जो अपने पति और दूसरे आदमी के बारे में शिकायत करती है, उसको न्याय देने का काम प्र. न्यायाधीश करते हैं।

न्याय पंड़ित का जिक्र एक दो जगह पर ही आया है जो प्र. न्यायाधीश को मदद करते हैं।

बलाध्यक्ष का भी एक ही जगह पर उल्लेख हैं। महाराज सुद्युम्न दंडनायक पर क्रोधीत हो जाते हैं। राज्य में चोरी होने के कारण वे क्रोधित हैं। ऐसे समय में वे बलाध्यक्ष को भी फटकारते हैं। उन्हें दोषियों को मृत्युदंड देने का आदेश देते हैं।

नाटक में द्वारपाल, चांड़ाल, प्रार्थी स्त्रियाँ, प्रार्थी पुरूष, अपराधी, चाँवर-धारिणी, नागरिक, वाचक, प्रतिवाचक, कुत्ते, हरिण आदि गौण पात्रों का भी जगह-जगह पर उल्लेख मिलता है। इस प्रकार श्रोत्रिय जी पात्रों का चरित्र-चित्रण करने में सफल हुए हैं।

4.3.2 'साँच कहूँ तो' पात्र चरित्र चित्रण

'साँच कहूँ तो' यह श्रोत्रिय जी का प्रकाशन काल की दृष्टि से द्वितीय नाटक है। इसमें कुल मिलाकर पच्चीस पात्र हैं। मुख्यतः इसमें पाँच प्रमुख पात्र हैं। नाटककार ने लोक-गायक और विदूषक का चित्रण कथा-

वस्तु को गति देने हेतु किया है। राजा बोसलदेव और रानी राजमती के आसपास कथानक घूमता रहता है। राजा भोज और भानुमती का चरित्र भी लेखक ने सफलता से चित्रित किया है। राजा बीसलदेव की प्रथम पत्नी रानी इंद्रावती का भी चित्रण लेखक ने किया है। पूरे नाटक में रानी राजमती के चरित्र लेखक ने किया है। पूरे नाटक में राणी राजमती के चरित्र पर नाटककार ने बल दिया है। साथ ही साथ बीसलदेव का भी उतनी ही सशक्तता से चित्रण हुआ है।

4.3.2.1 **बीसलदेव**

बीसलदेव प्रमुख पात्रों में से एक महत्वपूर्ण पात्र है। नाटक का पूरा कथानक बीसलदेव के इर्द-गीर्द घूमता दिखाई देता है। बीसलदेव एक राजा है। इंद्रावती जैसी रानी से विवाह करने के बाद भी वह राजा भोज की पुत्री राजमती से विवाह करता है।

राजा बीसलदेव शूर-वीर राजा है। वह अपने आपको चक्रवर्ती राजा समझता है। राजा के कथन से यह बात स्पष्ट होती है "ओऽऽ, क्या बावली हुई हो राणी जी ! सोचो, इत्ते बड़े चक्रवर्ती राजा की राणी होकर आप....."[12] बीसलदेव के राज्य में नमक का निर्माण होता था इस बात का उसे अभिमान है। वह अपने आपको भारतवर्ष का सबसे बलवान राजा समझता है। शूर-वीर एवं पराक्रमी होने के साथ-साथ बीसलदेव स्वाभिमानी है। राणी राजमती के फटकारने के कारण उसे बारह बरस तक न मिलने का प्रण करता है।

बीसलदेव एक वचनबद्ध राजा है। राणी राजमती को बीसलदेव ने बारह बरस तक वापस न आने का और अपने साथ हीरे लाने का जो वचन दिया था उसको निभाता है। राणी राजमती अभी किशोरी है। ऐसे समय में राजा उसको छोड़कर उड़ीसा की ओर चला जाता है। राणी राजमती कों ऐसा लगता था कि एक न एक दिन बीसलदेव जरूर वापस आएगा। मगर ऐसा हुआ नहीं बीसलदेव अपने प्रण के अनुसार बारह सालों के बाद ही हीरे लेकर अपने राज्य की ओर पधारता है।

नाटककार ने बीसलदेव की कामुक प्रवृत्ति का भी चित्रण किया है। राणी राजमती किशोरी होने के बावजूद बीसलदेव उसके साथ कामुक क्रिडाएँ करने का प्रयास करता है। रानी राजमती अभी किशोरी होने के कारण राजा का यह व्यवहार उसे अपरिचित लगता है। आधी उम्र बीत जाने के बाद भी बीसलदेव के अंदर काम की आसक्ति है। नाटककार बीसलदेव के माध्यम से तत्कालीन अन्य राजाओं और शासकों पर प्रहार करना चाहते हैं।

4.3.2.2 राजमती

राजमती राजा भोज और राणी भानुमती की पुत्री है। उसका विवाह राजा बीसलदेव के साथ किया जाता है। राणी राजमती के दो रूपों का चित्रण यहाँ पर किया गया है। राजमती किशोरी जो बीसलदेव से विवाहीत होने के बाद भी बालिका जैसा व्यवहार करती है और दूसरी जो राजा बीसलदेव के विरह में लगभग बारह सालों तक जलती रही।

किशोरी राजमती विवाह होने के पहले अपनी सखियों के साथ कुछ न कुछ खेलती रहती है। उसी प्रकार वह विवाह के बाद भी राजा को खेलने का आमंत्रण देती है। किशोरी राजमती एक वाचाल राणी है। वह राजा बीसलदेव के साथ ठीक तरह से व्यवहार नहीं करती। राजा के साथ जब राजमती की पहली भेंट हो जाती है तब वह उसे मूँछे कटवाने की सलाह देती है। इतना ही नहीं तो वह कहती है कि एक राजा को मूँछे शोभा नहीं देती।

राजमती फक्कड व्यक्तित्ववाली स्त्री है। वह निड़रता से बीसलदेव से बात इस प्रकार करती है "राजाजी, तुमने अपनी मूँछ नहीं मुड़वाई ?"[13] खेलने-दौड़ने की उम्र में उसका बीसलदेव के साथ विवाह हो जाता है। इसी कारण उसका बचपना अभी गया नहीं है। राजा के साथ वह निड़रता से बाते करती है। एक राजा के साथ अपना विवाह हुआ है साथ ही साथ उसके साथ मर्यादा में रहकर ही बाते करनी चाहिए इस बात की उसे बिल्कुल चिंता नहीं है।

नाटककार ने युवती राजमती का भी चित्रण किया है। राजा बीसलदेव जब राजमती की फटकार के कारण उसे छोड़कर उड़ीसा चला जाता है तब राजमती उसके विरह में व्याकुल हो उठती है। उसे अन्न पाणी, राजमहल सब सूना लगता है। उसे एक रात एक साल जैसी लगती है। सारा वातावरण विराण लगता है। उसे अपनी भूल का अहसास हो जाता है। ऐसे कठिन समय में जब उसकी मामीसा कुटनी उसे दूसरे पुरूष के साथ रात बिताने की सलाह देती है तब उसे राजमती मारकर भगा देती है। उसे अपने पति बीसलदेव पर पूरा विश्वास है।

राजमती सही रूप में एक भारतीय पवित्रता नारी नजर आती है। बारह सालों तक पति से दूर रहने के बाद भी वह अपने शील का रक्षण करती है। उसकी मामीसा कुटनी जब उसको किसी अन्य पुरूष के साथ रात काटने की सलाह देती है तब वह उसको पीटने का प्रयास करती है - "अहा ! आप बड़ी दयालु है मामीसा ! (धीरे से) आप तनिक ठहरो, मैं आपकी पीठ पूजा करूँगी।"[14] वह पति विरह के कारण कृष सी बन गयी है। इस प्रकार राजमती सही रूप में एक भारतीय पतिव्रता स्त्री, एक पत्नी और एक बेटी के रूप में पाठकों के सामने आती है।

4.3.2.3 इंद्रावती

इंद्रावती बीसलदेव की प्रथम पत्नी एवं महाराणी के रूप में पाठकों के सामने आती है। इंद्रावती का

चित्रण नाटककार ने सफलता से किया है। राजमती के महल में प्रवेश करने से उसके अहं को ठेस पहुँचती है। वह राजमती से ईर्ष्या करने लगती है। राजमती वाचाल है, चुडैल है वह राजा को आनंदित नहीं रख सकती इस प्रकार की धारणा उसके मन में हैं।

इंद्रावती राजा की पहली पत्नी होने के कारण राजा का खयाल रखती है। बीसलदेव की पसंद नापसंद उसे पता है। वह हरदम राजा को आनंदित रखना चाहती है। राजा जब राजमती के कारण राज्य को छोड़कर उड़ीसा की ओर जा रहा था ऐसे समय में वह राजा से न जाने की बिनती करती है।

इंद्रावती एक स्वार्थी एवं कपटी स्त्री है। उसके कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है - "(कूट ढंग से) छाती का भार उतार दो स्वामी, मैं तो कहती हूँ विष की पुडिया घर में रखना ठीक नहीं, गाँव गोयरे के बाहर फेंक देनी चाहिए। इस नाग-फाँस को काटकर परे फेंक दो स्वामी !"[15] बीसलदेव राजमती के कारण परेशान हो जाता है। राजमती को इंद्रावती के सामने कुछ गालियाँ देता है। इंद्रावती इसी बात को उठाती हैं और राजा बीसलदेव से बिनती करती है कि राणी राजमती को इस राज्य के बाहर अपने मायके भेज दिया जाए। इतना ही नहीं तो उसे वह विषैली नागिन तक कह देती है। यहाँ पर इंद्रावती का स्वार्थी स्वभाव दिखाई देता है।

इस प्रकार इंद्रावती बीसलदेव की पत्नी होने के साथ-साथ एक स्वार्थी नारी है। इसका चित्रण नाटककार ने सफलता से किया है।

4.3.2.4 राजा भोज

राजा भोज एक शूर-वीर राजा हैं। अपनी पुत्री राजमती के विवाह को लेकर उन्हें चिंता है। इसीलिए वे चारों दिशाओं में अपने दूतों को उचित वर ढूँढने के लिए भेज देते हैं।

राजा भोज एक चिकित्सक राजा हैं। अपने दूतों में से जो मारवाड़ की ओर गया था उस मारवाड़ के राजा बीसलदेव को ही वह अपनी पुत्री के लिए पति चुनते हैं। उन्हें पता है कि बिना शूरता के धन का और ऐश्वर्य का कोई मोल नहीं क्योंकि एकाध दिन कोई उसे छिनकर ले जा सकता है। राजमती को वर ढूँढने गया एक दूत जब भोज से कहता है कि यह राजा मीठी बानी औ माणिक मोती से परिपूर्ण है तब भोज उसे कहते है - "वीरता के बिना विलास और कोमलता राजा के काम की नहीं, ऐसा राजा स्वयं भी नष्ट हो सकता है और प्रजा का नाश कर सकता है।"[16] राजा भोज ऐसे राजा को भी अपनी बेटी नहीं सौंपते जो बारह पहर घोड़े पर बैठता है।

अपनी पत्नी भानुमती के आग्रह के कारण भोज राजा बेटी का विवाह बीसलदेव से कराते हैं। उन्हें पहले से ही बीसलदेव शूर-वीर और पराक्रमी राजा अपनी बेटी के लिए उचित लगता था। फिर भी वह दूतों को भेजकर फिर एक बार पुष्टि करते हैं। यहाँ पर राजा भोज के चिकित्सक व्यक्तित्व का दर्शन होता है।

4.3.2.5 भानुमती

भानुमती राजा भोज की धर्मपत्नी और राणी राजमती की माँ है। नाटक की शुरूआत में श्रोत्रिय जी ने भानुमती और भोज का चित्रण किया है। भानुमती हिंदू नारी है। मध्यकाल में बाल-विवाह की प्रथा प्रचलित होने के कारण भानुमती भी अपनी पुत्री राजमती की शादी जल्दीसे जल्दी कराने की चिंता में दिखाई देती है।

भानुमती अपनी बेटी के विवाह को लेकर अपने पति के साथ बातचीत करती है। इसी कारण राजा भोज जल्दी से जल्दी उसका विवाह बीसलदेव से कराते हैं।

भानुमती को पता है कि किस प्रकार बात करने से राजा भोज मान जाते हैं। वह राजा से बिनती करती है कि "बेटी राजो के हुए पूरन बारह साल अब भी क्या आया नहीं परणाने का काल, महाराजा ही हो नहीं, बेटी के हो बाप अच्छा वर ढूँढों करो झटपट पीले हाथ।"[17]

4.3.2.6 उड़ीसा नरेश

तृतीय अंक के पाँचवे दृश्य में महाराज उड़ीसा नरेश का चित्रण हुआ है। बीसलदेव एक यात्री बनकर उनके राज्य में रहता है। विशेष व्यक्तित्व होने के कारण उड़ीसा नरेश उसे राजमहल में ही रूकने का आदेश देते हैं।

उड़ीसा के नरेश जब बीसलदेव को देखते हैं तभी से उनके मन में शंका है कि यह व्यक्ति कुछ विशेष है सामान्य आदमी नहीं है। इसी कारण अपने खास यात्री का ध्यान रखते हैं। उड़ीसा नरेश को जब पता चलता है कि अपने ही राज्य में रहनेवाला व्यक्ति शस्त्रविद्या में पारंगत है और वह बसीलदेव चौहान एक राजा हैं तब वह आश्चर्यविभोर हो उठते हैं। युद्ध में उड़ीसा नरेश को जीत दिलवानेवाले बीसलदेव का महाराज अभिनंदन करते है - "सांभरवाल ! आपने युद्ध में जैसी वीरता दिखाई थी, उससे हम समझ तो गए थे कि आप साधारण आदमी नही हैं, परंतु नहीं जानते थे कि आप महाराज बीसलदेव चौहान हैं। आपने परिचय छिपाकर हमें पाप में डाला है नरेश !"[18]

दस सालों तक उड़ीसा में रहने का कारण समझने के बाद उड़ीसा नरेश बीसलदेव को आमंत्रित कर सही-गलत का फैसला करवाते है। राजा बीसलदेव को वे चार सौ उठों पर हीरो के गठ्ठे लादकर अजमेर भेज देते हैं यहाँ पर उड़ीशा नरेश का उदात्त व्यक्तित्व दिखाई देता है।

4.3.2.7 लोकगायक

नाटककार श्रोत्रिय जी ने लोकगायक के माध्यम से कथावस्तु को गति देने का काम किया है। सबसे

पहले पूर्व-रंग में लोकगायक दर्शकों के सामने स्थानीय वेशभूषा में विदूषक के साथ गाता नजर आता है।

लोकगायक नाटक की शुरूआत में मंगलाचरण गाता है। सभी देवताओं की वंदना करता है। विदूषक समय-समय पर उसे टोकता रहता है मगर लोकगायक अपना काम अत्यंत तन्मयता से करता है।

दूसरी बार पहले अंक के चतुर्थ दृश्य में बीसलदेव और राजमती की शादी होने के बाद लोकगायक मंच पर आता है। बीसलदेव और राजमती कृष्ण रूक्मिणी जैसे लगते हैं इस प्रकार का वर्णन वह करता है।

दूसरे अंक के प्रथम दृश्य में भी लोकगायक और विदूषक दिखाई देते हैं। नाटक की शुरूआत में लोकगायक राजा बीसलदेव की स्तुति करता दिखाई देता है मगर यहाँ पर अनमेल विवाह का चित्रण काव्य के माध्यम से करता है जैसे -

"लाडी बारा बरस की चाली से से ब्याव।
विधना अब तू ही बता कैसा तेरा न्याव॥"[19]

इसप्रकार लोकगायक अनमेल विवाह पर प्रकाश ड़ालता है।

4.3.2.8 विदूषक

लोगों को हँसाना एवं उनका मनोरंजन करना विदूषक का काम होता है। प्रस्तुत नाटक में लोकगायक को विरोध करता हुआ और व्यंग्य करता हुआ विदूषक दर्शकों के सामने आता है।

पूर्वरंग में विदूषक मंगलाचरण करत हुए लोकगायक से व्यग्यात्मक बातचीत करता नजर आता है। नाटक की शुरूआत में ही विदूषक नेताओं पर व्यंग्य करता है। विदुषक लोकगायक से इन नेताओं के बारे में कहता है - "हो हो हो बापजी ! हमारे नेता तो आठ पहर बारह घड़ी ऐसी बक-बक करते है, जिसका (सिर पर हाथ लगाकर) ऊपर खाणे से कोई नाता ही नहीं होता ! उनका विनाश तो दूर की बात है, उलटे वे दिन दूने रात चौगुने फूल-फल रहे हैं।"[20] भ्रष्ट नेताओं के चरित्र पर कीचड़ उछालने का काम भी विदूषक ने किया है। लोकगायक के साथ मिलकर कथानक की पूर्वसूचना देने का काम भी विदूषक ने सफलता से किया है।

4.3.2.9 पंडित

नाटक में कुल दो बार पंडित जी का उल्लेख मिलता है पहले राजा भोज के दरबार में रहनेवाले पंडित जो राजमती का रिश्ता लेकर बीसलदेव के राज्य की ओर प्रयान करते हैं वे और दूसरे राजा बीसलदेव के राज्य के पंड़ित जो यात्रा पर गए बीसल को मिलने हेतु उड़ीसा राज्य की तरफ चले जाते हैं।

राजा भोज और भानुमती अपनी बेटी राजमती का विवाह तय करने हेतु पंड़ित को बीसलदेव के राज्य

की ओर अजमेर भिजवाते हैं। पंड़ित राजा और रानी के आदेशानुसार प्रस्थान करता है।

दूसरी बार राजा बीसल और रानी राजमती के बीच अनबनी होती है ऐसे समय में राजा बीसल के ग्रहगण किस प्रकार बुरे हैं इसका वर्णन पंड़ित करते हैं। पंडित बीसलदेव से कहता है - ''घणी खम्मा महाराज ! चार मास प्रवास का योग नहीं है।''[21]

तीसरी बार जब पंडित राजा बीसलदेव की खोज में उड़ीसा राज्य की ओर चला जाता है वहाँ पर चतुराई से बीसल को पहचानकर राज पर पर्दा ड़ालते हैं। रानी राजमती पर क्रोधित बीसल को उसके प्रति आकर्षित कराने का महत्त्वपूर्ण काम पंड़ित करता है।

4.3.2.10 योगी

महाराज उड़ीसा नरेश के राज्य में पंड़ित बीसलदेव से मिलने चले जाते हैं। वहाँ पर बीसल और पंड़ित मिलकर योगी से मिलते हैं। योगी के पास अद्‌भुत शक्तियाँ है। इन शक्तियों के सहारे वह कहीं भी भ्रमण कर सकता है, प्रकट हो सकता है। इसी कारण राजा बीसलदेव योगी से प्रार्थना करता है कि राणी राजमती को उनके आने का संदेश भेज दे।

योगी अंतर्यामी है वह बीसल को देखते ही पहचानता है कि इसने अपनी पत्नी को धोखा दिया है, उस पर अन्याय किया है। योगी बीसलदेव को गालियाँ देता है ''(सक्रोध) स्वार्थी, धूर्त, पाखण्डी ! महाराज बनता है ! एक भोली-भाली नार को छोड़ आया, अब योगी के आगे गिड़गिड़ाने आया है ! जा, चला जा, नहीं तो भस्म कर दूंगा।''[22] आखिर में योगी बीसलदेव के राज्य अजमेर की ओर चला जाता है। वहाँ पर रानी राजमती को पहचानता है मगर उसकी परीक्षा लेकर उसे बीसलदेव की चिट्‌ठी देता है।

इस प्रकार नाटककार ने योगी का चरित्र-चित्रण किया है।

4.3.2.11 उड़ीसा की महारानी

नाटक में तीसरे अंक के पाँचवे दृश्य में उड़ीसा की राणी का चित्रण नाटकार ने किया है। राजा बीसल की पहचान होने के बाद महाराणी बीसल को अजमेर न जाने का आग्रह करती है। महाराणी बीसलदेव को अपना भाई मानती है। महाराणी बीसलदेव की चार शादियाँ करा देने का आश्वासन देती है। उसे बाग-बगीचा लगवाने की तथा आराम से रहने के लिए महल का प्रबंध करने का आश्वासन देती है। राजा बीसलदेव जब वापस आने लगता है तब महाराणी बड़ी बहन बनकर बीसलदेव को आशीर्वाद देती है - ''तो जाओ बीरा, मेरा आशीष है। तू बहूत सुख पाए ! हे भाई, उस सुहागिन से भुजाएँ पसार कर मिलना, अब उसे दुख मत देना मेरे बीरे !''[23] तथा

सुखी रहने की कामना करती है।

इस प्रकार उड़ीसा की महारानी एक आदर्श बहना तथा आदर्श नारी है।

4.3.2.12 कुटनी

कुटनी राजा भोज की बहन है। अपनी भाणजी राजमती की विरहावस्था को सुनकर उसे ढ़ाड़स बंधाने तथा उसके साथ रहने के लिए कुटनी बीसलदेव के राज्य में आती है।

कुटनी राजमती को बीसलदेव के बारे में उल्टी सीधी बातें बताती है। वह अन्य नारीयों के साथ गुलछर्रे उड़ा रहा होगा उसका कोई भरोसा नहीं है इस प्रकार की बातें बताती है। राजमती को पहली बार उसकी बाते ठीक लगती है , मगर जब वह अन्य पुरूष के बारे में सोचने के लिए कहती है तो उसे पीठपर मारकर भगा देती है।

नाटक में अन्य भी पात्र हैं मगर गौण रूप में उसमें प्रमुख हैं राजमती की सखियाँ जो समय-समय पर राजमती को चिढ़ाती है उसके साथ खेलती है। सखियाँ हमेशा राजमती के ईर्द-गीर्द नजर आती हैं।

इसके अलावा बीसलदेव के दरबार में रहनेवाले राव, उमराव, दीवान, दूत, द्वारपाल आदि का भी चित्रण किया गया है मगर उनकी भूमिका न के बराबर है। पर्दा पकड़नेवाले भी दो पात्र मंच पर दिखाई देते हैं। इसके अलावा सुहागिनों एवं राजमती की दासीयों का भी चित्रण दिखाई देता है।

4.3.3 "फिर से जहाँपनाह" पात्र चरित्र-चित्रण

'फिर से जहाँपनाह' प्रकाशन काल की दृष्टि से श्रोत्रिय जी का तृतीय नाटक है। इसमें एक पात्र ने अलग-अलग दो भूमिकाएँ निभाई हैं। दो अंको में दो युगों का चित्रण किया गया है। पहले अंक में चित्रित अनंत चक्रवर्ती दूसरे अंक में वजीरे आजम मंगल सिंह की भूमिका अदा करता है। इसी प्रकार सभी प्रमुख पात्र दो-दो भूमिकाएँ, अदा करते हैं। पहले अंक में लोकतंत्र का चित्रण होने के कारण इसमें चित्रित पात्र 21 वीं सदी के नेताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं और दूसरे अंक में तानाशाही का अर्थात 18 वीं सदी की राज्य-व्यवस्था का चित्रण होने के कारण इसमें चित्रित पात्र मंत्री एवं दरबारी की भूमिका निभाते हैं।

4.3.3.1 अनंत चक्रवर्ती

अनंत चक्रवर्ती लोकतंत्र के मुखिया हैं। सत्ताधारी पार्टी के प्रमुख नेता हैं। इनमें सारे गुण विद्यमान है जो पार्टी के अध्यक्ष या मुखिया में होने चाहिए। चक्रवर्ती आज के लोकतंत्र के मुखिया का सही रूप है। नाटक की शुरूआत में ही पता चलता है कि चक्रवर्ती अपने अधिकारों का किस प्रकार गलत उपयोग करता है। अपनी पहचान या रिश्तेदार को चपरासी बनाने हेतु सारे नियम और वसूलों को शिथिल करवाने का आदेश देता है -

"हलो...बेवकूफ, चपरासी की नियुक्ति है या गवर्नर की ?.... अच्छा, दल का कर्याकर्ता है... चिपका दो।"[24] अरे बेचारा गरीब है, उम्र तो अधिक होगी ही, नियम शिथिल कर दो।

चक्रवर्ती एक पार्टी प्रमुख के रूप में सक्षम है। अपने मंत्रीमंडल पर उनका नियंत्रण है। त्यागमूर्ति जैसे बड़े व्यक्ति को भी वे इज्जत नहीं देते। वर्मा ग्रह-वित्त मंत्री है। वह एक नेक एवं वफादार राजनेता है। ऐसे व्यक्ति को हमेशा नीचा दिखाने के प्रयास में चक्रवर्ती रहते हैं।

अनंत चक्रवर्ती एक कामुक इन्सान हैं। अपनी निजी स्टेनो जुही पर वह अत्याचार करते है। उसे अपनी हवस का शिकार बनाते हैं। जिस प्रकार आज के सत्ताधीश अधिकार प्राप्त होने के बाद उनका गलत उपयोग करते हैं उसी प्रकार अनंत चक्रवर्ती भी इस लड़की पर बलात्कार करके उसका कत्ल करवाते हैं। इतने बड़े नेता होने के बावजूद ऐसी गिरी हुई हरकत करते है।

चक्रवर्ती एक भ्रष्ट एवं फरेबी आदमी है। स्वयं पर लगा स्टेनो पर बलात्कार एवं कत्ल का आरोप वे ठुकराकर एक नेक इन्सान वर्मा जैसे व्यक्ति पर ड़ाल देते हैं। ग्रह-वित्त मंत्री वर्मा आर्थिक बजट में गरीबों के हित को लेकर उथल-पुथल करते हैं मगर चक्रवर्ती उसे बदल देते है। वर्मा जैसे नेक इन्सान को मारने की साजिश चक्रवर्ती ही करते हैं।

कश्यप जी की मृत्यु के पश्चात उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करने हेतु चक्रवर्ती सबसे पहले दूरदर्शन के सामने आते हैं। यहाँ पर उनका झूठा एवं फरेबी व्यक्तित्व सामने आता है।

चक्रवर्ती एक हत्यारा भी है। जिस प्रकार एक बड़े राजनेता को एक बड़ा गुनहगार होने की आवश्यकता होती है उसी प्रकार चक्रवर्ती भी एक बड़ा गुनहगार है। अपने करीबी लोगों की हत्या करवाते समय उसे किसी भी प्रकार का दुःख नहीं होता। कश्यप जैसे व्यक्ति की हत्या अनंत चक्रवर्ती ही करवाता है।

चक्रवर्ती को हमेशा अपने कुर्सी की फिक्र लगी रहती है। स्टेनो जुही के हत्या के मामले में न्यायीक आयोग का गठन करने के लिए चक्रवर्ती त्यागमूर्ति जी को विरोध करता है। उसे पता है कि अगर उसने न्यायीक आयोग बिठाया तो वह संकट में पड़ सकता है। इसके कारण उसकी कुर्सी हाथ से न जाए यह चिंता उसे हमेशा रहती है।

इस प्रकार अनंत चक्रवर्ती एक लोकतंत्र के मुखिया होकर भी निहायत भ्रष्ट, गुनहगार, झूठा एवं फरेबी व्यक्ति है। असल में वह आज के लोकतंत्र के नेताओं का प्रतिरूप है।

4.3.3.2 त्यागमूर्ति

त्यागमूर्ति अनंत चक्रवर्ती की सरकार में धन धंदा कमीशन मंत्री हैं। पार्टी में वे अनंत चक्रवर्ती के

बिल्कुल निकटवर्ती हैं। चक्रवर्ती की बनाई हुई योजनाओं पर अमल करना त्यागमूर्ति का काम है जिस प्रकार चक्रवर्ती झूठा एवं फरेबी सृजनेता है उसी प्रकार त्यागमूर्ति भी झूठा एवं फरेबी राजनेता है।

अनंत चक्रवर्ती की जिस प्रकार पार्टी के अन्य मंत्रियों पर पकड़ है उसी प्रकार त्यागमूर्ती की भी हैं। अन्य को सूचना एवं आदेश देने का काम त्यागमूर्ति करता है। मिस्टर वर्मा जैसे बड़े नेता को मारने का हुक्म त्यागमूर्ति काली को देता है। वर्मा के खिलाफ चक्रवर्ती जी को उल्टी-सीधी बातें बताने का काम भी त्यागमूर्ति का ही है।

काली जैसे खूंख्वार गुंडे को काबू में रखकर उससे अनैतिक काम त्यागमूर्ति करवाता है। काली को जेल से उठाकर उसी जेल का अफसर किया जाता है। त्यागमूर्ति उसे चेतावनी देता है - ''हमको धोका दिया तो ठीक नही''[25] काली घबरा जाता है।

त्यागमूर्ति अनंत चक्रवर्ती का सच्चा सेवक हैं जब सुख के दिन होते हैं तो भी उसके साथ रहता है और दुःख के दिनों में भी चक्रवर्ती के साथ ही रहता है। इस प्रकार त्यागमूर्ति अनंत चक्रवर्ती का एक सच्चा साथी, उन्हीं के समान भ्रष्ट एवं फरेबी व्यक्ति है। नाटककार ने उनका व्यक्तित्व पंतप्रधान के दाएं हाथ की तरह गढ़ा है।

4.3.3.3 गुणगान

अनंत चक्रवर्ती की सरकार में गुणगान सचिव है। पार्टी के मुखिया चक्रवर्ती के निकटवर्तियों में से एक हैं। गुणगान ऐसे मंत्री हैं जो दो पाटों के बीच घीस चूके है। एक तरफ वे चक्रवर्ती और त्यागमूर्ति जैसे वरिष्ठ नेताओं को सबकुछ मानते है तो दूसरी तरफ ग्रह वित्त मंत्री वर्मा जैसे प्रामाणिक व्यक्ति के खिलाफ नहीं जा सकते। गुणगान खुद असमंजस में हैं। उनके पास निर्णय लेने की क्षमता नहीं हैं। चक्रवर्ती और त्यागमूर्ति जैसे नेताओं के आगे एक चापलूस की तरह बर्ताव करते हैं। मिस्टर चक्रवर्ती और त्यागमूर्ति के आदेश के कारण गुणगान 'समय सारथी' नामक समाचार पत्र निर्बंध डाल देते हैं और जब विरोधी दल के नेता पूछताछ करते है तो चक्रवर्ती और त्यागमूर्ति की तरफ इशारा कर देते है। एक उदाहरण दृष्टव्य हैं - ''कुछ भी हो सर! माननीय त्यागमूर्ति जी और माननीय मुखियाजी मेरे सब कुछ है सर।''[26]

चक्रवर्ती के खिलाफ बिठाया गया जाँच आयोग जब गुणगान से पूछताछ करता है तब वे वर्मा को दूर करके चक्रवर्ती और त्यागमूर्ति को अपना मान लेते है। इस प्रकार गुणमान एक सचिव के नाते अपनी भूमिका बखूभी निभाते हैं। समय आने पर चापलूस भी बनते है अतः गुणगान एक भ्रष्ट व्यक्ति के रूप में पाठकों एवं दर्शकों के सामने आते हैं।

4.3.3.4 मिस्टर वर्मा

मिस्टर वर्मा चक्रवर्ती की सरकार में ग्रह-वित्त मंत्री का पद संभाले हुए हैं। उनके पास दो विभाग हैं और वे इसके लिए लायक प्रतीत होते हैं। मि. वर्मा गुणगान और त्यागमूर्ति जैसे भ्रष्ट व्यक्ति नहीं हैं। उन्हें समाज की चिंता रहती है। आम लोगों के हित को देखकर वे आर्थिक बजट बनाते हैं मगर चक्रवर्ती को यह बजट बिल्कुल पसंद नहीं है।

वर्मा जी ने बजट में विदेश से मंगाई जाने वाली सभी मनोरंजन की चीजों पर सौ प्रतिशत आयात शुल्क लगाया है। वर्मा चक्रवर्ती को इसके बारे में जानकारी दे रहे हैं - 'इस बजट में कम्प्युटर, टी.वी., रेशमी कपडे, शराब, सिगरेट जैसी विलासिता की चीजों पर सौ प्रतिशत टैक्स बढाने का प्रस्ताव है। इससे देश को पाँच हजार करोड़ की आय होगी, जिसे हम...."[27] व्यापारी लोग इससे नाराज है। बजट मे वर्मा जी ने किसानों के लिए अनेक योजनाएँ बनाई है। इस प्रकार की योजनाओं के चलते सरकार को भी काफी फायदा हो जाएगा और उन्नति भी होगी इस प्रकार वर्मा जी सोचते हैं। अनंत चक्रवर्ती को देश की अपेक्षा अपनी कुर्सी की अधिक चिंता है इसी कारण चक्रवर्ती वर्मा ने बताया हुआ बजट नापसंद कर देते हैं।

वर्मा एक वफादार नेता हैं। चक्रवर्ती और त्यागमूर्ति जैसे नेता उनके विरोध में हैं। चक्रवर्ती वर्मा जैसे वफादार नेता को खत्म करना चाहते हैं। यही हमारे प्रजातंत्र की सबसे बड़ी कमजोरी है। वर्मा समय सारथी जैसे समाचार पत्र पर निर्बंध ड़ालने के विरोध में हैं मगर उनकी बात सुननेवाला कोई भी उनकी सरकार में नहीं है।

इस प्रकार वर्मा एक वफादार राजनेता तथा आदर्श व्यक्ति है जो हमेशा आम लोगों के हित में सोचते रहते है।

4.3.3.5 मंगलम

अनंत चक्रवर्ती की सरकार में मंगलम कारावास मंत्री हैं। गुणगान, त्यागमूर्ति की तरह मंगलम भी एक भ्रष्ट मंत्री है। उनके पहले कथन से ही यह बात स्पष्ट हो जाती है। वे त्यागमूर्ति से कहते हैं -

"हमारे कारावास विभाग में मजे ही मजे हैं।

आप अपने विभाग की बताओ।"

एक भष्ट राजनेता के अलावा एक चापलूस आदमी की तरह वे बर्ताव करते हैं। विद्रोही पार्टी के नेता कश्यप की हत्या करने के आदेश त्यागमूर्ति मंगलम को देते हैं। मंगलम बिना किसी हिचकिचाहट के मोतीपुरा अस्पताल में उसकी हत्या करा देते है। मंगलम ही इस बात का जिक्र करता है - "श्रीमान उसे मोतीपुरा अस्पताल के जनरल वार्ड में रखवा दिया है वहाँ ग्यारंटेड काम होता है।"[28]

अनंत चक्रवर्ती और त्यागमूर्ति की तरह मंगलम भी पार्टी के अन्य नेताओं पर अपना रोब जमाते है। मंगलम 'समय सारथी' समाचार पत्र पर निर्बंध डालने के आदेश सचिव गुणगान को देता है। इस प्रकार मंगलम ने कारावास मंत्री की भूमिका प्रस्तुत नाटक में बखूभी से निभाई है।

4.3.3.6 **अब्दुल्ला**

अब्दुल्ला विद्रोही पार्टी के एक नेता हैं। बलवान और वसुंधरा इन कार्यकताओं के साथ अब्दुल्ला चुनाव में कुर्सी हासील करने के प्रयास में हैं। अब्दुल्ला अनंत चक्रवर्ती की सरकार गिराने के लिए कोई सुराग खोजने में व्यस्त रहता है। भूकंप, हडदंग या और कोई मुद्दे को लेकर लोगों को चक्रवर्ती की सरकार के खिलाफ भड़काने की सोच में हैं। अब्दुल्ला इस बात से पूर्णतः परिचित हैं कि बुद्धिजीवी लोगों को उनके साथ करने से कोई फायदा नहीं होगा। वे अशिक्षा को मुद्दा बनाना चाहते हैं। अशिक्षित लोगों की संख्या अधिक होने के कारण वे ऐसा सोचते हैं।

अब्दुल्ला विद्रोही पार्टी के प्रमुख नेता हैं। एक नेता के रूप में वह सफल हुए हैं। नेता का काम होता है बोलना और आश्वासन देना। अब्दुल्ला एक ऐसे नेता है जो किसी दूसरे नेता को बोलने में, वादविवाद में पछाड़ देते है। 'समय-सारथी' पर क्यों और किसने निर्बंध ड़ालने के आदेश दिए ? इस विषय को लेकर गुणगान को कटघरे में खड़ा किया जाता है वहाँ पर गुणगान त्यागमूर्ति की तरफ इशारा करना है। त्यागमूर्ति उस पर भड़क उठते हैं ऐसे समय में अब्दुल्ला उन्हें चूप करा देता है -

"त्यागमूर्ति :- (आवाज दबाता हुआ) बेवकूफ, गधे !

अब्दुल्ला : - सुन ले यार, तूल मत दो !

त्यागमूर्ति : - फिर वही हरकत स्साले अब्दुल्ला तेरी दाढ़ी जितनी बाहर है उतनी अंदर !

अब्दुल्ला : - तेरी तो समूची अंदर है !"[29]

इस प्रकार अब्दुला एक सफल राजनेता और विद्रोही दल के मुखिया के रूप में दर्शकों के सामने आते हैं।

4.3.3.7 **बलवान**

बलवान विद्रोही पार्टी के कार्यकर्ता हैं। नाटककार ने इनका चित्रण पहले अंक के पांचवे दृश्य में किया है। अब्दुल्ला और वसुंधरा के साथ मिलकर सरकार के खिलाफ लोगों को भडकाने के प्रयास में बलवान लगा हुआ है। पूरे नाटक में एक दो जगह पर ही इसका जिक्र हुआ है। इन्हें भारतीय की आदतों का पता है। इसके

साथ-साथ इन्हे यह भी मालूम है कि अनंत चक्रवर्ती की सरकार में कौन प्रामाणिक और कौन अप्रामाणिक है।

इस प्रकार बलवान विद्रोही पार्टी के एक नेता के रूप में सामने आते हैं।

4.3.3.8 वसुंधरा

वसुंधरा विद्रोही पार्टी की कार्यकर्ता है वह एक स्त्री होकर भी साहसी व्यक्तित्वाली है। चक्रवर्ती और त्यागमूर्ति जैसे भ्रष्ट नेताओं की पोल खोलने में वसुंधरा मदद करती हैं। एक उदाहरण दृष्टव्य है वसुंधरा - ''मुखिया चक्रवर्ती के जुही से क्या संबंध थे, जग जाहिर है यह।''[30]

वसुंधरा एक साहसी नारी है। एक राजनेता को साहसी होने की आवश्यकता होती है। त्यागमूर्ति जैसे वरीष्ठ मंत्री के साथ वाद-विवाद करना किसी सामान्य व्यक्ति का काम नहीं है। यह काम वसुंधरा आसानी से करती है।

इस प्रकार वसुंधरा विद्रोही पार्टी की सक्रीय राजनेता तथा साहसी नारी है।

4.3.3.9 जुही

जुही अनंत चक्रवर्ती की स्टेनो है। अनंत चक्रवर्ती जुही के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। एक सामान्य नारी होने के कारण जुही कुछ नहीं कर सकती। उसे पता है कि अगर उसने चक्रवर्ती के खिलाफ आवाज उठाई तो उसका कत्ल भी हो सकता है। वह एक शोषित नारी है। चक्रवर्ती जैसे राजनेता की हवस की शिकार बनी हुई है। चक्रवर्ती उसपर बलात्कार करके उसका कत्ल करवा देते हैं।

इस प्रकार जुही एक शोषित एवं पीडित नारी है।

4.3.3.10 कालिका प्रसाद

कालिका प्रसाद काली इस नाम से जाना जाता है। वह खूंख्वार गुनहगार और डाकू है। उसे इस विशेषता के कारण चक्रवर्ती 'राष्ट्रीय कारावास अभिभावक संस्थान' का प्रधान बनाते हैं। काली पर वर्मा की हत्या करने की जिम्मेदारी सौंपी जाती है। काली उसे अपना कर्तव्य समझकर पूरा कर देता हैं। नाटककार काली के द्वारा यह स्पष्ट करना चाहता है कि हमारे नेताओं के पास भी इस प्रकार के लोग है जिनके बल पर वे राजनीति करते हैं।

इस प्रकार कालिका प्रसाद एक खूंख्वार गुनहगार और डाकू है। पहले अंक के गौण पात्रों के रूप में पत्रकार विलियम, देशपांडे, असलम, कौशिक, दरबान वादी वकील, पत्रकार कौशिक आदि आते हैं। पत्रकार चक्रवर्ती को प्रश्न पूछकर परेशान करते रहते हैं। वकील अदालत में अच्छी भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार प्रथम

अंक में नाटककार श्रोत्रिय जी ने प्रजातंत्र के अनेक नेताओं का चरित्र-चित्रण किया है। साथ-साथ अन्य लोगों का भी चित्रण सशक्तता से किया है।

नाटक के दूसरे अंक में 18 वीं सदी के राज-व्यवस्था का चित्रण किया गया है। इसीलिए प्रस्तुत अंक में जो पात्र चित्रित हैं वे तत्कालीन परिवेश के अनुकूल राजा, प्रधान, सेनापती आदि भूमिकाएँ निभाते हैं।

4.3.3.11 आदमशाह

आदमशाह 18 वीं सदी की मध्ययुगीन राज्य-व्यवस्था के प्रमुख राजा है। आदमशाह की सहायता के लिए अन्य मंत्रीगण हैं उनमें प्रमुख हैं - सलाहकार - शफी खान, दारोगा-कासिमखान, सिपहसालार असदुल्ला, वजीरे आजम-मंगलसिंह, नूरशाह आदि। आदमशाह इन सब मंत्रियों के प्रमुख एवं सत्ताधारी हैं।

आदमशाह राजा होने के कारण सर्व सत्ता के अधिकारी हैं। आदमशाह कसूरवारों को बेकसूर और बेकसूरों को कसूरवार ठहराते हैं। नालायक, भ्रष्ट आदमी को वे अपने दरबार में नौकरी देते हैं। वे सरासर अपने अधिकारों का गलत उपयोग करते हैं।

आदमशाह कामुक प्रवृत्ति के राजा हैं। अपनी पत्नी मलिका-ए-आलिया से छुप-छुप कर वे नृत्यांगना सईदा से ईश्क लड़ाते रहते हैं। हाजरा के सामने भी उन्हें अपने कर्म पर पछतावा नहीं है। उलटे वे मलिका-ए-आलिया को ही टोकते रहते हैं।

आदमशाह शक्की स्वभाव के आदमी हैं। अपनी पत्नी हाजरा जब उनसे राज्य की देखभाल करने के लिए नूरशाह की नियुक्ति करने की बिनती करती है तो वे हाजरा की तरफ शक की निगाहों से देखते हैं। उन्हें लगता है कि हाजरा नूरशाह को राजगद्दी पर देखना चाहती है। इस प्रकार का वर्णन द्रष्टव्य है -

हाजरा : बेहतर हो किसी नेक इन्सान को रिआया की तकलीफें दूर करने के लिए मुकर्रर कर लें।

शाह : (शातिर अंदाज में) आपके खयाल में कौन है इस काबिल ?

हाजरा : नूर मियाँ कैसे रहेंगे ? आपके सगे छोटे भाई हैं।

शाह : (व्यंग्य से) नूर मियाँ। (भेद से) हाँ, नूर मियाँ इन दिनों आपके कुछ ज्यादा ही करीब है।''[31]

आदमशाह एक खूंख्वार गुनहगार है। राजा होने के कारण उनका यह रूप किसी को दिखाई नहीं देता। आदमशाह सिपहसालार असदुल्ला सहित अपनी पत्नी के चचाजान और राजापुर के युवराज इम्तियाज आदि लोगों के कत्ल करने के आदेश देते हैं। इसमें उनको असफलता मिलती है।

आदमशाह एक शासक के रूप में असफल हो जाते हैं। उनके खिलाफ अंत में सारे मंत्रीगण बगावत करते हैं। राजा की पत्नी हाजरा भी आदमशाह के खिलाफ हो जाती है। इस प्रकार आदमशाह सर्वसत्ता के

अधिकारी, कामुक प्रवृत्ति वाले, शक्की इन्सान और एक गुनहगार के रूप में दर्शकों के सामने आते हैं। नाटककार को मध्ययुगीन राजा का चरित्र बताने में पर्याप्त सफलता मिली है।

4.3.3.12 **शफीखान – (सलाहकार)**

शफीखान आदमशाह के सलाहकार एवं उनके निकटवर्ती मंत्री हैं। शफीखान आदमशाह की हर बात से वाकिफ है। आदमशाह की मन की बातों को भी वह पहचानते हैं। शफीखान का मानना है कि आदमशाह कभी भी गलती नहीं कर सकते। शफीखान की सलाह से ही आदमशाह कसूरवारों को बेकसूर और बेकसूरों को कसूरवार ठहराते है।

शफीखान हमेशा आदमशाह के नजदीक रहना चाहता है। जब मंगलसिंह को आदमशाह असदुल्ला का कत्ल करने का हुक्म देते हैं तो वह असदुल्ला को खत्म करने की कोशिश करता है। इस बात के कारण शफीखान को जलन होती है। वह मंगलसिंह से ईर्ष्या करने लगता है। वह स्वगत में ही मंगलसिंह के बारे में सोचता है उसे गालियाँ देता है -

"शफी : (स्वगत शातिर मंगलसिंह इस बार हमसे बाजी मार ले गया। खैर हम भी देखते हैं। (शाह से) बड़ा खूंख्वार दरिंदा है हुजूर फिलहाल सिर्फ अपनी जान बचाने और आपके करीब आने की गर्ज से हत्या करवाई है। सोचिए हुजूर खुदगर्ज, दोस्त का नहीं हुआ, वह किसका होगा ? यही मौका है रस्ते से हटाने का इस नमकहराम को।"[32]

शफीखान एक स्वार्थी एवं भ्रष्ट इन्सान हैं। वह हरदम अपनी तरक्की चाहता है। राजा का गुलाम बनकर रहना उसे पसंद है। राजा की गलतियों की तरफ वह अनदेखी करता है। इस प्रकार शफीखान राजा का चादुकार, स्वार्थी इन्सान के रूप में दर्शकों के सामने आता है।

4.3.3.13 **मंगलसिंह : – (वजीरे आजम)**

मंगलसिंह आदमशाह के दरबार में वजीरे आजम है। मंगलसिंह एक नेक और ईमानदार व्यक्ति हैं। राज्य के विविध लेखकों ने किसान आदि विषयों को लेकर जो किताबें लिखी हैं उन्हे वे आदमशाह के सामने पेश करना चाहते हैं और उन्हें सन्मानित भी करना चाहते हैं। मगर आदमशाह इन लोगों को निराश कर देते हैं।

अब्दुल्ला जैसे पराक्रमी सिपहसालार के खिलाफ षडयंत्र राजा आदमशाह और कासिमखान मिलकर कर रहे हैं। इस बात से अब्दुल्ला को एक सुरक्षित जगह पर रखने का काम भी मंगलसिंह करते है। जब राजा का संदेशवाहक असदुल्ला के बारे में जानकारी हासिल करने आता है तब वे उसको झूठी खबर देते हैं -

''संदेशवाहक : हुजूर जानना चाहते हैं - काम हो गया ?

मंगलसिंह : सिपहसालार वाला ? बस हुआ ही समझें। राजापुर की खबर का इंतजार है, आते ही.... (कत्ल का इशारा असदुल्ला देख लेता है)''[33]

मंगलसिंह पर मलिका-ए-आलिया हमेशा विश्वास रखती है। इस बात का पता मंगलसिंह को भी है। इसीलिए वे हाजरा के चचाजान और इम्तियाज को भी हिफाजत से रखते हैं। अंत में नाटकीय ढंग से उनके सामने इन दोनों को पेश करते हैं।

इस प्रकार मंगलसिंह एक नेक वजीरे आजम, ईमानदार इन्सान और अच्छे हृदय वाले व्यक्ति हैं।

4.3.3.14 असदुल्ला : – (सिपहसालार)

असदुल्ला आदमशाह के राज्य की सेना के सपिहसालार हैं। असदुल्ला एक शूर एवं पराक्रमी व्यक्ति हैं। इसी कारण उन्हें सिपहसालार का पद हासिल हुआ है।

आदमशाह के पडोसी राज्य राजापुर, मीरगंज और फतेहगढ मिलकर आदमशाह के राज्य पर आक्रमण करने की तैयारी में है। इस प्रकार की खबर आदमशाह को मिलती है। आदमशाह असदुल्ला को बुलाकर तुरंत उनपर आक्रमण करने के आदेश देते हैं। सिपहसालार असदुल्ला प्रामाणिकता से काम करते हुए इन रियासतों को पराजित करते हैं।

आदमशाह कासिमखान और मंगलसिंह को अबदुल्ला को खत्म करने के आदेश देते है मगर मंगलसिंह अब्दुल्ला को हिफाजत से रखता है। असदुल्ला को इस बात का पता तब चलता है जब एक संदेशवाहक मंगलसिंह से असदुल्ला वाली खबर पूछने हेतु मंगलसिंह के कक्ष में आता है। इस बात से परिचित होने के बाद असदुल्ला क्रोधित होकर मंगलसिंह पर भी संदेह करता है। आदमशाह के सगे भाई नूरशाह बगावत करते हैं और आदमशाह शक्की स्वभाव के कारण उनकी पत्नी मलिका-ए-आलिया भी उनके खिलाफ जाती है। ऐसे समय में असदुल्ला आदमशाह के सामने आता है। जीवित असदुल्ला को देखकर आदमशाह आश्चर्यविभोर हो जाते हैं और अपने वफादार सिपहसालार इस प्रकार के बर्ताव के कारण पश्चात्ताप होता है।

इस प्रकार असदुल्ला एक कर्तव्यदक्ष सिपहसालार और वफादार मंत्री के रूप में दर्शकों के सामने आता है।

4.3.3.15 नूरशाह

नूरशाह आदमशाह के छोटे भाई के रूप में चित्रित हुए हैं। इनका चित्रण सिर्फ दो जगहों पर ही हुआ है।

आदमशाह जब एक शिक्षक को सबसे बड़ी सजा फाशी देता है तब नूरशाह इस बात को विरोध करते हैं। इसका वर्णन इस प्रकार है -

नूरशाह : शाह आलम ! आखिर इन्साफ का कोई पैजामा भी होता है या नहीं ?''[34]

इस प्रकार आदमशाह की गलतियों को दिखाने का ढ़ाडस नूरशाह करते हैं इससे पता चलता है कि उनमें अच्छा-बूरा पहचानने की परख है।

आदमशाह के हटवादी स्वभाव के कारण ऊब चुके सब मंत्रीगण नूरशाह के नेतृत्व में आदमशाह के खिलाफ बगावत करते हैं। इसमें आदमशाह की पत्नी मलिका-ए-आलिया तथा असदुल्ला भी शामिल हो जाते है। इससे यह स्पष्ट होता है कि नूरशाह आदमशाह से बेहतर व्यक्ति है।

इस प्रकार नूरशाह एक काबिल इन्सान हैं, उन्हे अच्छे-बूरे की परख हैं।

4.3.2.16 मलिका-ए-आलिया (हाजरा)

मलिका-ए-आलिया आदमशाह की पत्नी एवं महाराणी है। इनका असली नाम हाजरा है। आदमशाह उन्हें मलिका-ए-आलिया नाम से पुकारते हैं। आदमशाह जब सईदा नामक नृत्यांगना से ईश्क लड़ाते हैं तब हाजरा उनको टोकती है -

''हाजरा : (व्यंग्य से) हुजूर के इश्क को सलाम करती हूँ (सईदा से कड़ककर) बेशर्म चल हट यहाँ से।''[35]

इस प्रकार अपने पति को गलत काम करने से रोकने का ढ़ाडस हाजरा में है।

राजापुर के युवराज इम्तियाज और हाजरा के चचाजान को खत्म करने के हुक्म आदमशाह अपने सिपाहियों को देते हैं। इस बात का पता चलते ही हाजरा आदमशाह से पूछताछ करती है। आदमशाह मुकर जाते हैं। मगर हाजरा के वफादार मंगलसिंह इन दोनों को हिफाजत से रखते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि दरबार के मंत्रियों को विश्वास में रखने में हाजरा को आदमशाह से अधिक सफलता मिली है।

मंगलसिंह हाजरा के सामने इम्तियाज, चचाजान और असदुल्ला की रूहों को पेश करता है यहाँ पर उनका अंधविश्वासी रूप सामने आता है। इस प्रकार हाजरा एक महाराणी, ढ़ाडसी नारी तथा अंधविश्वासी नारी के रूप में चित्रित हुई है।

गौण पात्रों में सईदा जो नृत्यांगना के रूप में चित्रित हुई है। डाकू दरयाव सिंह, गुप्तचर अधिकारी जो आदमशाह की मदद करते हैं, तेज प्रसाद, उस्मान मियाँ (अफरातफरीवाला), कवि ''जुगनू'' (भाट कवि) शफीखान का विश्वस्त सिपाही , मीर मोहम्मद, बलवान सिंह (बलवाई), इम्तियाज (राजापुर के युवराज) और काल-पुरूष का चित्रण आम आदमी के रूप में हुआ है।

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में जितने भी पात्रों का चरित्र-चित्रण हुआ उसमें नाटककार को काफी सफलता मिली है। अतः यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत नाटक चरित्र-चित्रण की दृष्टि से सफल हुआ है।

4.4 संवाद तथा कथोपकथन

4.4.1 'इला'

प्रस्तुत नाटक में नाटककार श्रोत्रिय जी ने पौराणिक कथा का वर्णन किया है। फिर भी उन्होंने खड़ी-बोली हिंदी भाषा का ही प्रयोग किया है। इस नाटक के संवाद छोटे, रोचक, आश्चर्यविभोर करनेवाले दिखाई देते हैं। साथ ही साथ परिस्थितिनुकूल बड़े संवाद भी इसमें दिखाई देते हैं। जादातर संवाद पात्रानुकूल हैं। जब राजा मनु और राजगुरू वशिष्ठ जी बाते करते हैं तो उन संवादों में एक दूसरे के प्रति आदर दिखाई देता है और जब राजा मनु और महाराणी श्रद्धा के बीच बातें चलती हैं तो इनमें अनौपचारिकता आ जाती है। पूरे नाटक में नाटककार ने स्वगत कथन का भी प्रयोग किया है। परिस्थिति के अनुसार भी संवादों में बदलाव नजर आता है। मनु और श्रद्धा के बीच चल रही बातचीत को उदाहरण स्वरूप देख सकते हैं -

"मनु : (प्रवेश करते हुए) देवी, उधर क्या देख रही हो ? किन विचारों में खोई हो ?

श्रद्धा : (चौंककर खड़ी हो जाती है) नहीं, कुछ तो नहीं। यूँ ही उधर देखने....

मनु : (तरकश : धनुष को देखते हुए) सुद्युम्न आया था यहाँ ? आखेट के लिए गया था न।

श्रद्धा : वहीं से लौटा था न !

मनु : पूछा तुमने ? कोई आखेट-वाखेट किया या केवल वन की शोभा देखकर ही लौट आया ?

श्रद्धा : एक हरिणी का !

मनु : चलो, शुभ संकेत हैं। नहीं तो, यही सुनने को मिलता है कि राजकुमार जंगलों में पशु-पक्षियों से खेलता रहता है।"[36]

इसप्रकार नाटक में पर्याप्त छोटे संवाद देखने को मिलते हैं। मनु और वशिष्ठ जी के बीच इला को लेकर जब बातचीत होती है तो संवाद तणावपूर्ण बन जाते हैं -

"मनु : गुरूदेव ! आप चाहे तो पुत्री को पुत्र में बदल सकते हैं।

आघातकारी वाद्य-झंकार, वशिष्ठ स्तब्ध।

वशिष्ठ : ऐसा कुकर्म ?....

मनु : (शीघ्रता से) यदि आप चाहते हैं कि मनु का सम्राट के रूप में आदर बना रहे; यदि आप चाहते हैं कि लोग नास्तिक न हो तो आपको यह करना होगा गुरूदेव (पैरों पर झुक जाता है।)

वशिष्ठ : (आहत-से) नहीं महाराज ! मुझे धर्म-संकट में मत डालो ! प्रकृति महाशक्ति है। वह साधना का सम्मान करती है... संसार के कल्याण के लिए अपने अंजाने रहस्य तक खोल देती है वह। परंतु विनाश और विकृति वह सहन नहीं कर सकती।

मनु : साधना के सामने क्या हमने प्रकृति को सिर झुकाते नहीं देखा है ? नहीं देखा है बंजर धरती में लहलहाता खेत ?''[37]

नाटक के तीसरे अंक के चतुर्थ दृश्य में इला और वशिष्ठ मुनि के बीच में होनेवाले संवाद पर्याप्त लंबे और अपठनीय नजर आते हैं -

''इला : ऐसा लगता है कि आप मेरे ही अनुभवों को दोहरा रहे हैं।

वशिष्ठ : हमने तुम्हारे यौन-परिवर्तन में सफलता पा ली थी। किसी सीमा तक प्रकृति ने तुम्हें उसके अनुरूप ढाल दिया था, परंतु जिस समय तुमने अपनी पूरी शक्ति से उसे चुनौती देने की ठानी, ठीक उसी समय प्रकृति ने एक झटके में तुम्हारा वार लौटा दिया। तुम्हारा मुखौटा उतार फेंका और उघाड़ दिया वह रूप जो वास्तविक था, तुम्हारा अपना !

इला : पर मैं अपना अतीत क्यों भूल गई ? कैसे भूल गई कि मैं एक सम्राट थी... मेरा घर... पत्नी, प्रजा सब कुछ !

वशिष्ठ : तुम्हारे पास कुछ भी नहीं बचा था बनावटी ! जो लादा हुआ था, वह समूचा उतर गया था... उसकी स्मृति, उसके साक्ष्य सभी मिट गए थे। तुम अपने मूल से जूड़ गई थी, यहाँ तक कि वह 'नाम' भी याद हो आया तुम्हें जो शायद तब सुना था तुमने जब तुम्हारी आँखे भी ठीक से नहीं खुली थी - 'इला' कभी अपने बोध में सुना था यह नाम तुमने ?''[38]

पूरे नाटक में अधिक तर श्रोत्रिय जी ने पात्रानुकूल संवादों का प्रयोग किया है। वशिष्ठ, मुनि, राजा मनु, महारानी श्रद्धा आदि पात्र अपने व्यक्तित्व के अनुसार व्यवहार करते हैं। इला, सुद्युम्न, एक ही मन के अनेक रूप हैं। विद्याधर, अरूंधती, महामंत्री भी आवश्यकतानुसार बातचीत करते हैं। अतः यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत नाटक के संवाद मंचन के लिए कहीं भी कठीनाई उपस्थित नहीं करते श्रोत्रिय जी ने सफल संवादों का निर्माण इस नाटक में किया है।

4.4.2 'साँच कहूँ तो' - संवाद / कथोपकथन

प्रस्तुत नाटक की कथा राजस्थानी में लिखे 'बीसलदेव रासो' से संबंध रखती है। श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में परिवेश के अनुसार संवादों की योजना की है। संवाद नाटक में महत्त्वपूर्ण होते हैं। उसी के आधार पर

नाटक का कथानक गति प्राप्त करता है। नाटककार ने दरबारी भाषा के अनुरूप संवादों का गठन किया है। नाटक में राजभवन और उससे संबंधित परिवेश का चित्रण हुआ है। तत्कालीन परिस्थिति के अनुसार नाटककार ने पात्रानुकूल संवादों का गठन किया है। संवाद पठनीय नजर आते हैं। जादातर संवाद छोटे और सुव्यवस्थित लगते हैं। स्वगत कथन का भी प्रयोग इसमें किया गया है। प्रस्तुत नाटक की रचना राजस्थानी में लिखे 'बीसलदेव रासो' पर की जाने के कारण राजस्थानी लोकगीतों का इसमें समावेश किया गया है। कहीं कहीं पर संवाद काव्यात्मक बन गए हैं।

राणी राजमती और बीसलदेव के बीच जो कथोपकथन चलता है वह दिलचस्प लगता है। राणी राजमती वाचाल है इसीलिए श्रोत्रिय जी ने चुटकीले और तीखे शब्दों का प्रयोग किया है -

"राजमती : राजाजी, तुमने अपनी मूँछ नहीं मुड़वाई ?

बीसल : आपको अच्छी नहीं लगती

राजमती : (ओठों पर हाथ फेरते हुए उदास) हमारे को मूँछ ही नहीं ?

बीसल : (हँसते हुए) नहीं नहीं, हम पूछते हैं आपको हमारी मूँछे (हाथ फेरता है) अच्छी नहीं लगती ?

राजमती : थोड़ी भारी लगती हैं। (अभिनय सहित) इत्ता सा मुँह और इत्ती बड़ी मूँछे।

बीसल : सुनो राणीजी, अब लड़कपन छोड़ो, आपका ब्याव हो गया है।

राजमती : तो ऽऽ तो, क्या हो गया ? नवे महल में आ गई। नवे देश आ गई। (हाथ खींचते हुए) चलो घूमने चलें ! बीसलदेव हाथ झटकता है, कुढता है।

बीसल : ओ ऽऽ क्या बावली हुई हो राणी जी ! सोचो, इत्ते बड़े चक्रवर्ती राजा की राणी होकर आप...

राजमती : चक्रवर्ती तो राजा राम थे। तुम और चक्रवर्ती (ताली बजाकर हँसती है)"[39]

नाटक में जगह-जगह पर काव्यात्मक संवाद भी दिखाई देते हैं। राजस्थानी लोकगीत भी नाटक में पाए जाते हैं। प्रथम अंक के प्रथम दृश्य में राजा भोज और पंडित के बीच में जो संवाद हुए हैं उसे देखते हैं -

"भोज : हुक्म नहीं, अरज है जोशी जी ! हमारी लाड़ली बेटी राजमती अब बारह साल की हो गई। राणी जी का कहना है कि अब उसे परणाना चाहिए।

पंडित : खरी बात है महाराज !

भोज : तो सुनो जोशी जी :

ढूँढो ऐसा वीर वर जो हो चतुर सुजान होवें मोहित देवता, भू पर देव समान !

पंडित : हाँ अन्दाता ! हमारी बेटी भी तो कम नहीं है :

सुन लो धारा के धनी राजमती वह नार लक्ष्मी निकली हो नहा सरस्वती की धार।

हे महाराज सरस्वती और लक्ष्मी को एकसाथ धारण करना साधारण पुरुष के बस का नहीं है। चारों दिशाओं में दूत भेजकर योग्य वर की खोज करनी चाहिए, महाराज !''[40]

प्रथम अंक के तृतीय दृश्य में भी राजमती और उसकी सखी के बीच में भी इसी प्रकार के काव्यात्मक संवाद देखने को मिलते हैं वे निम्नानुसार -

''राजमती : (सखी के हाथ पर ताली देते हुए :)

फूँदी को फड़ाको

जीया बाई को काको

सखी (एक) : (राजमती के हाथ पर ताली देते हुए :)

काको लायो काकड़ी

काकी ने माँग्या बीज।

राजमती : (सखी - दो के हाथ पर ताली देते हुए :)

काका ने दी लात की

काकी ने गायो गीत।

X X X X X

सभी खिलखिलाती हसती हैं''[41]

नाटक में संवाद अपेक्षाकृत संक्षिप्त और सुव्यवस्थित लगते हैं। संक्षिप्त होने के कारण कंठस्थ करने के लिए आसान रहे हैं। इनमें बोलचाल की भाषा का प्रयोग नाटककार ने किया है। बीसलदेव राजमती की फटकार के कारण उड़ीसा राज्य की ओर जा रहा है इस प्रसंग पर राजमती और बीसल की बातचीत को ही देखते हैं -

''राजमती : (रोष से) अब क्या है ? हमारा खेल बिगाड़ दिया !

बीसल : (खीझकर) खेल-खेल... सुनो राणी जी, हमने एक निर्णय किया है।

राजमती : तो मैं क्या करूँ ? निर्णय करना राजा का काम है।

बीसल : निर्णय हमारे और तुम्हारे बारे में है।

राजमती : तो चोर-साहूकार का खेल खेलना है क्या ?

बीसल : (कडककर) लड़कपन छोड़ राणी, जीवन खेल नहीं है। मैं उड़ीसा जा रहा हूँ।''[42]

इसप्रकार नाटककार श्रोत्रिय जी ने मध्यकालीन परिवेश के अनुसार कहीं दरबारी ढंग के संवाद गढ़े हैं तो कहीं बोलचाल की भाषा में। अतः इसमें उन्हें पर्याप्त सफलता मिली है।

4.4.3 'फिर से जहाँपनाह' - संवाद / कथोपकथन

प्रस्तुत नाटक श्रोत्रिय जी के पहले दो नाटकों से बिल्कुल अलग है। इसमें दो ही अंक है और दो अंकों में अलग-अलग परिवेश, व्यवस्था का चित्रण किया गया है। प्रथम अंक में 21 वीं सदी के प्रजातंत्र का चित्रण नाटककार ने किया है इसलिए इसमें परिवेश के अनुसार संवादों का गठन किया गया है इसलिए राजनेताओं की विशिष्ठ भाषा में संवाद दिखाई देते हैं। दूसरी तरफ नाटक के दूसरे अंक में 18 वीं सदी के परिवेश का चित्रण है। इसमें तानाशाही का चित्रण है। नाटककार ने संवादों द्वारा तत्कालीन परिवेश को हुबहू चित्रित किया है। नाटक के प्रथम अंक में कबीर का वक्तव्य और वकीलों के बीच के संवादों को छोड़कर सभी संवाद संक्षिप्त एवं पठनीय है। पहले अंक में संवाद कहीं कहीं पर हास्यास्पद भी बने हुए है। कहीं पर तणावपूर्ण स्थिति पैदा करते हैं। दूसरे अंक में भी संवाद पर्याप्त संक्षिप्त है। यहाँ नाटकीय संवाद दिखाई देते हैं।

नाटक के पहले अंक के दूसरे दृश्य में जो संवाद दिखाई देते हैं वह अत्यंत सरल और सहजता से लिखे गए हैं -

''त्यागमूर्ति : कहो भाई मंगलम कैसा चल रहा है विभाग ?

मंगलम् : हमारे कारावास विभाग में तो मजे ही मजे हैं। आप अपने विभाग की बताओं।

त्यागमूर्ति : हमारा मंत्रालय भी बहुत तर चल रहा है।

मंगलम् : किधर जा रहे हैं ?

त्यागमूर्ति : चक्रवर्तीजी के बंगले और आप ?

मंगलम् : हम भी वहीं, चलिए।''[43]

चक्रवर्ती जैसे भ्रष्ट राजनेता का चित्रण खुद उसके बयान से होता रहता है। सारी परेशानियों की जड़ चक्रवर्ती है। उसकी भाषा में देशभक्ति और देशसेवा का ढोंग है -

''चक्रवर्ती : सीमाओं पर संकट के बादल घिरे हैं। देश भीतर से खंड़-खंड़ हो रहा है... देश की अखंड़ता और एकता की रक्षा करना सबका कर्तव्य है। (कबीर को दिखाकर) यह आदमी जो हमारे नाटक से बाहर है यही हमें फितूर की जड़ लगता है। बीमारी को जड़ से ही खत्म करना पड़ेगा।

बलवान : जैसे बच्चे को लेकर भागने वाले गुंडे पर जब बाप पिस्तौल तानता है तो गुंड़ा बच्चे को आगे कर देता हैं। उसी तरह ये लोग अपने पर खतरा आते ही देश को आगे खड़ा कर देते हैं। टेरिबल ! इन सबको फाँसी होनी चाहिए।

गुणगान : सावधान ! कानून हाथ में लेना जुर्म है।

बलवान : और कानून को सरासर चबा जाना ?

गुणगान : तथ्यों का परीक्षण अभी शेष है...

चक्रवर्ती : प्रस्तुत समग्री का गूढ परीक्षण होगा। नियामानुसार कार्रवाई की जाएगी अपराधी को बख्शा नहीं जाएगा।.... कार्रवाई समाप्त। निर्णय सुरक्षित !''[44]

दूसरे अंक में दरबारी व्यवस्था का चित्रण श्रोत्रिय जी ने किया है। यहाँ पर तानाशाही की व्यवस्था चित्रित है। दरबारी परिवेश होने के कारण तत्कालीन भाषा का भी प्रयोग संवादों में किया गया है। यहाँ पर संवाद हास्यास्पद बने हुए हैं दूसरे अंक के दूसरे दृश्य में शाह कैदियों को सजा सुनाता है यह चित्र है -

''शाह : हाँ... बाकी मुआमलाल ?

कासिम : कैदी नं. 4 उस्मान मियाँ वल्द अंजुम मियाँ। (सिपाही लाता है।)

कासिम : जुर्म-अमानत में खयानत। अफरातफरी और मिलावट करता है।

शफी : (कान में) बड़ा प्यारा जुर्म है हुजूर ! हमारा हमसफर है जनाब।

शाह : (मुस्कराते हुए) बड़ा प्यारा जुर्म है। गुस्ताख कहीं का ! इसे शाही खजाने का मुखिया बनाया जाए।''[45]

प्रस्तुत नाटक में पात्रानुकूल, परिस्थिति के अनुसार, चुटकिले, हास्यास्पद एवं गंभीरता पैदा करनेवाले संवाद दिखाई देते हैं। नाटककार, श्रोत्रिय जी को संवादों का गठन करने में पर्याप्त सफलता मिली है।

4.5 देशकाल वातावरण

4.5.1 'इला'

'इला' श्रोत्रिय जी का प्रकाशन काल की दृष्टि से प्रथम नाटक है। प्रस्तुत नाटक 'श्रीमद भागवत' पर आधारित है। नाटक का कथानक पुराण काल से संबंधित है फिर भी इसमें जिस समस्याओं का चित्रण किया गया है वह भविष्य से संबंध रखती है। साथ ही साथ नाटककार ने पुराने परिवेश के द्वारा 20 वीं सदी का चित्रण किया है।

आज का युग 21 वीं सदी का युग है। नाटककार ने ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथानक द्वारा बीसवीं सदी के मानव की ईच्छाओं और आकांक्षाओं को इस नाटक में प्रस्तुत किया है। इसके लिए उन्होने पौराणिक परिवेश को प्रस्तुत किया है। तत्कालीन राजव्यवस्था द्वारा नाटककार स्त्री की समस्याओं को चित्रित करना चाहता है। पुराण काल का राजा अपने राजगुरू एवं पुरोहितों के बल पर मनवांछित व्यवहार कर सकता था। वशिष्ठ मुनि जैसे पुरोहित तपोबल के आधार पर असाध्य को साध्य में बदल सकते थे उसी प्रकार बीसवीं सदी

के और आज के वैज्ञानिक भी विज्ञान के बल पर असाध्य को साध्य बनाने में सफल होते हैं। श्रोत्रिय जी पाठकों का ध्यान इस बात की ओर खिंचना चाहते हैं कि मानव विज्ञान के आधार पर अघोरी कृत्य करने लगा है इसमें उसे सफलता भी मिलती है मगर प्रकृति मानव को असली रूप दिखाती है।

आज 21 वीं सदी में भी नारी का शोषण जारी है। हमारे देश के संविधान ने उसे तेंतीस प्रतिशत आरक्षण प्रदान किया है। फिर भी हमारे देश के कई देहातों में नारी के प्रति उसी प्रकार का व्यवहार किया जाता है जिस प्रकार पहले किया जाता था। श्रद्धा आज के उन माताओं का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने को बेटियाँ चाहती है। मगर हमारा समाज आज भी पुरुष-प्रधान ही है। हर पिता स्वयं को पुत्र चाहता है। अपने कुल का नाम रोशन करने के लिए उसे पुत्र की अभिलाषा रहती है। इसी बात को श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में स्पष्ट किया है।

मानव पहले से ही जिज्ञासू रहा है। वह आज भी अधिक जिज्ञासू है। प्रकृति के खिलाफ अघोरी कृत्य वह पहले से ही करते आया है। मनु जैसा राजा भी लिंग-परिवर्तन करने जैसा घिनौना कृत्य करता है। आज का मानव मनु से भी अधिक बिगड़ चूका है। वह दवाओं और उपचार पद्धतियों की प्रचुरता के कारण कुछ भी करने को उतावला हो गया है। इस बात पर नाटककार श्रोत्रिय जी ने प्रकाश डाला है। इसके लिए उन्होंने आधुनिक परिवेश के बदले पौराणिक परिवेश का चित्रण किया है।

'इला' में चित्रित स्त्री फिर वह श्रद्धा हो या इला दोनों भी शोषित हैं। पुराणे जमाने से स्त्री पर अन्याय एवं अत्याचार होते आए हैं। आज की नारी इससे कहीं अलग है। श्रद्धा ऐसी औरत है जिसे राणी होकर किसी भी प्रकार का अधिकार प्राप्त नहीं है। वह राजा की इच्छानुसार व्यवहार करती है। नारी होकर भी वह अपने पेट में पल रही कन्या को पुरुष बनने से नहीं बचा सकती है।

प्रस्तुत नाटक में चित्रित परिवेश भले ही पुराणकालीन हो मगर यह आधुनिक समस्याओं को प्रकट करने में सफल हुआ है। राजगुरू वशिष्ठ जैसे आज भी कई ऐसे विशारद हैं जो ऐसे घिनौने कृत्य कर रहे हैं। नाटककार श्रोत्रिय जी इस बात की ओर इशारा करते हैं।

4.5.2 'साँच कहूँ तो' - देशकाल वातावरण

प्रस्तुत नाटक भी श्रोत्रिय के पहले नाटक 'इला' की भाँति नारी की समस्याओं को चित्रित करता है। साथ ही साथ सत्ताधारी लोगों के अहं को ठेस पहूँचाने का काम भी नाटककार ने इस नाटक में किया है। श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में अनमेल विवाह की समस्या का चित्रण किया है मगर इसके लिए उन्होंने मध्यकालीन परिवेश और युग का सहारा लिया है। तत्कालीन परिस्थिति के अनुसार नाटककार ने उसी काल की समस्याओं को नाटक में चित्रित किया है। मध्यकाल में राजा एवं महाराजा अपने राज्य पर नियंत्रण रखते थे। नाटककार ने

बीसलदेव को प्रातिनिधिक तौर पर चित्रित किया है। इस काल में प्रचलित अनमेल विवाह, स्त्री शोषण, अनवरत चलते युद्ध, अविश्वासी राजागण जो अपने ही पड़ोस के राजा से ईर्ष्या करते थे आदि का चित्रण किया है। इन सारी समस्याओं का चित्रण नाटककार ने सफलता से किया है।

बीसलदेव राजस्थान के मारवाड़ प्रांत के राजा थे। वे मालवा के राजा भोज की पुत्री राजमती के साथ दूसरा विवाह करते हैं। राजमती अभी किशोरी है फिर भी उसका विवाह बीसलदेव जैसे अधेड़ उम्र के राजा के साथ किया जाता है। बीसलदेव जब राजमती के साथ प्रणय करना चाहता है तब राजमती उसको इन्कार कर देती है। उसका किशोरपण अभी उसके व्यक्तित्व में वैसा की वैसा है। राजमती एक स्वतंत्र व्यक्तित्ववाली नारी है। वह स्वतंत्रता से विहार करनेवाले पंछी की तरह है, उसकी वाणी तेज है।

तत्कालीन राजाओं को धन एवं ऐश्वर्य का हमेशा घमंड़ रहता था। कुछेक राजा वीर योद्धा भी थे मगर विदेशी राजा के सामने उनको पराजय का सामना करना पड़ता था। वे अपने ही पड़ोस में रहनेवाले राजा के साथ ईर्ष्या करते थे समय आने पर युद्ध भी करते थे। राजा बीसवदेव ऐसे मध्यकालीन राजाओं के प्रतिनिधि राजा हैं। उन्हें अपने धन, ऐश्वर्य एवं शौर्य पर घमंड़ है इस घमंड़ को तोड़ने का काम राजमती जैसी नारी द्वारा किया गया है।

तत्कालीन राजा, स्त्री, मदिरा और ऐश्वर्य में अपनी पूरी जींदगी बिताते थे। प्रशंसकों के सहारे खुद अपनी प्रशंसा में लगे रहते थे। राजा राज्य के किसी दूसरे व्यक्ति की उन्नति देख नहीं सकता था। इसी प्रकार का चरित्र बीसलदेव का है। वह श्रोत्रिय जी ने परिवेश के अनुसार उड़ीसा राज्य के राजा का चित्रण भी सफलता से किया है। उड़ीसा के राजा के पास हीरों के भंजर थे मगर फिर भी उसका व्यक्तित्व अच्छा प्रतीत होता है। राजा बीसलदेव को उड़ीसा के राजा जब पहचानते हैं तो चकित हो जाते हैं। उन्हें इस बात का ज्ञान है कि बिना नमक के भोजन नहीं किया जा सकता। वे बीसलदेव को सम्मानपूर्वक हीरों से लदे उटों के साथ भेजते हैं। यह उनका उदात्त व्यक्तित्व है।

नाटककार श्रोत्रिय जी तत्कालीन परिवेश के सहारे आज की समस्याओं का चित्रण करने में सफल हुए हैं। हमारे समाज में आज भी अनमेल विवाह होते हैं। आज के राजनेता बीसलदेव के समान अहंभावी होते हैं। नारी के साथ भी अन्याय होता है। इन सारी समस्याओं को नाटककार ने सफलता से पाठकों के सामने पेश किया है।

4.5.3 'फिर से जहाँपनाह' - देशकाल वातावरण

प्रस्तुत नाटक प्रकाशन काल की दृष्टि से श्रोत्रिय जी का अंतिम नाटक है। यह नाटक पहले दो नाटकों से बिल्कुल अलग है। इसमें एक साथ दो परिवेशों को चित्रित करने में श्रोत्रिय जी सफल हुए हैं।

नाटक के पहले अंक में श्रोत्रिय जी ने 21 वीं सदी का चित्र खींचा है। इसमें आज के नेताओं पर कीचड़ उछालने का काम किया है। साथ ही साथ लोकतंत्र की कमजोरियों को भी पाठकों के सामने लाने का काम नाटककार ने सफलता से किया है। हमारे देश का लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है। लोकतंत्री व्यवस्था होने के कारण हम ऐसे लोगों को हमारा प्रतिनिधित्व करने भेजते हैं जो सबसे भ्रष्ट लोग होते हैं। नाटककार का उद्देश्य यह है कि कुर्सी पर बैठा हर आदमी उसी प्रकार व्यवहार करता है जिस प्रकार पहले ने किया था। मतलब हर युग में सत्ता पर बैठे लोग बदल जाते हैं मगर उनकी प्रवृत्तियाँ नहीं बदलती।

अनंत चक्रवर्ती एक ऐसे नेता हैं, जो आज के नेताओं का प्रतिनिधिक रूप है। आज के नेतागण बिल्कुल अनंत चक्रवर्ती जैसा व्यवहार करते हैं। खुद गलत काम करते हैं मगर इल्जाम बेकसुरों के सिर पर ड़ाल देते हैं। चक्रवर्ती के सहकारी मंत्री भी हमेशा उसकी चापलुसी करते रहते हैं। देशहीत की अपेक्षा अपना स्वार्थ साध लेने की आदत उनको लगी हुई है। यहाँ पर नाटककार आज के परिवेश को चित्रित करने में सफल हुए हैं।

नाटक के दूसरे अंक में श्रोत्रिय जी ने 18 वीं सदी के परिवेश का चित्रण किया है। उस समय हमारे देश पर मुस्लिम राजा राज्य करते थे। नाटककार ने इन दो परिवेशों का चित्रण एक साथ किया है इसके पीछे उनका उद्देश्य यही है कि समय और परिवेश बदलने से आदमी और उसकी प्रवृत्ति नहीं बदलती बल्की वह भ्रष्ट ही बनता जाता हैं। यहाँ पर आदमशाह एक राजा हैं। उन्हें हमेशा अपने सलाहकारों पर आशंका रहती है। वह अपने आपको सर्वश्रेष्ठ समझते हैं जिसप्रकार आज के नेता अपने आपको समझते हैं।

नाटककार श्रोत्रिय जी ऐतिहासिक परिवेश के द्वारा हमारे देश का आज का चित्र स्पष्ट करना चाहते हैं। उन्होंने आदमशाह को हमारे देश के सर्वप्रमुख व्यक्ति के प्रतीक के रूप में चित्रित किया है। वे विरोधी पार्टी को विद्रोही पार्टी के नाम से पुकारते हैं। आदमशाह ऐसा इन्सान है जो सबसे भ्रष्ट व्यक्ति है। वह कामुक है धन एवं कुर्सी का लालच तो उसे हमेशा रहता है। इस प्रकार श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में ऐतिहासिक एवं पौराणिक परिवेश द्वारा आज के परिवेश को पाठकों के सामने स्पष्ट किया है।

4.6 *भाषा*

4.6.1 'इला'

भाषा नाटक की जान होती है। नाटक में जादातर बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाता है। नाटककार को प्रभावात्मक भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। 'इला' की भाषा भी प्रेक्षकों पर प्रभाव डालती है। प्रस्तुत नाटक का परिवेश पुराणकालीन होकर भी इसमें बोलचाल की हिंदी का प्रयोग किया गया है।

श्रोत्रिय जी ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग 'इला' में किया है। राजा मनु एक राजा होने के कारण उनकी

भाषा से अधिकारवाणी झलकती है। श्रद्धा से, वशिष्ठ से और अन्य लोगों से बातचीत करते समय इसका प्रत्यय आता है। पुत्रकामेष्ठि यज्ञ के विपरीत फल के कारण मनु वशिष्ठ जी पर क्रोधित होते हैं इसका एक प्रसंग -

"मनु : (कड़ाई से) राजगुरू ! ...पुत्रकामेष्ठि ! ...किसने किया था यह यज्ञ ?

वशिष्ठ : (विस्मय से) किसने ? ...आपने ...महादेवी ने..

मनु : (विचलन सुधारते हुए) नहीं, नहीं, किसने करवाया था ?

वशिष्ठ : मैंने... (अकेले उत्तरदायित्व से बचते हुए) सभी ऋत्विजों ने... पंडितों ने..."[46]

नाटक के अन्य पात्र भी अपने व्यक्तित्व के अनुसार बोलते हैं। श्रद्धा मनु से प्यार से पेश आती है। वशिष्ठ भी एक राजगुरू की तरह व्यवहार करते हैं।

नाटक में कई ऐसे प्रसंग है जहाँ पर व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग नाटककार ने किया है। सुद्युम्न के ठीक तरह से राजकारोबार न करने से मनु अपना उत्तराधिकारी खोजने में लगे हैं। श्रद्धा उनसे व्यंग्यात्मक भाषा में बात करती है -

"श्रद्धा : बस-बस ! लज्जा कीजिए कुछ... । आप पूरी तरह समर्थ है। जो आपको स्वाभाविक ढंग से नहीं मिलता उसे आप अस्वाभाविक ढंग से पा ही लेते हैं। (व्यंग्य से) प्रयत्न कीजिए, संभव है आपके नाक-कान से ही उत्तराधिकारी टपक पड़े।

मनु : (तैश में) मुझे चुनौती न दो रानी ! मैं भी मनु हूँ... ऋतुमय पुरुष ! यह भी करके दिखा दूँगा। तुम भोगो राज-वैभव, मैं चला तपस्या को। ...जो चाहा है उसे पाकर ही रहूँगा।

श्रद्धा : (व्यंग्य से) और राजकाज का क्या होगा ? अपनी सत्ता को, बिना रक्षक के ही छोड़ जाएँगे ?"[47]

इसी प्रकार व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग श्रोत्रिय जी ने किया है।

नाटक के दूसरे अंक की शुरूआत में वाचक और प्रतिवाचक के बीच जो संवाद दिखाई देते हैं उसमें नाटककार ने काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। वाचक और प्रतिवाचक सुद्युम्न के बारे में प्रेक्षकों को जानकारी देते हैं -

"दोनों : तो दर्शकों...

वाचक : सुद्युम्न बढ़ता रहा... बढ़ता रहा...

चढ़ता रहा सीढ़ियाँ उम्र की
खाता रहा हिचकोले
भीतर से खींचता था कोई मन
बाहर खींची जाती थी बाँह...

प्रतिवाचक : वह भोग रहा था जो अनकिया
वह भोग रहा था जो अनजान
इसी तरह सुद्युम्न हो गया जवान
आइए चलकर वहीं देखे उसे..."[48]

नाटक में जादातर वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि उससे संवाद कंढस्थ करने में कठिनाई होती है। श्रोत्रिय जी ने कहीं-कहीं पर वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग यहाँ पर किया है। सुद्युम्न का परिवर्तन इला में हो जाता है तब वशिष्ठ मुनि इला को उस घटना के बारे में बता रहे हैं -

"वशिष्ठ : बेटी, संयोग ने तुम्हें सुमेरू की जिस तलहटी में पहुँचा दिया था, वहाँ एक अद्‌भुत वन है। उसके बारे में भाँति-भाँति की कथाएँ कही जाती है, परंतु तथ्य यह है कि वहाँ ऐसी वनस्पतियाँ है जिनकी गंध, रस और स्पर्श से, वहाँ के मोहक वातावरण से व्यक्तित्व की कठोरता गलने लगती है।

इला : क्या इतनी कि पुरुष का शरीर ही स्त्री-शरीर में बदल जाए ?"[49]

इस प्रकार श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में पात्रानुकूल, तनावपूर्ण, व्यंग्यात्मक, काव्यात्मक एवं वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

4.6.2 'साँच कहूँ तो' - भाषा

प्रस्तुत नाटक मध्यकालीन कथानक पर आधारित है। राजस्थानी काव्य 'बीसलदेव रासो' इसका आधार है। फलतः प्रस्तुत नाटक में प्रादेशिक भाषा का प्रयोग होना स्वाभाविक है। नाटककार श्रोत्रिय जी नाटककार से ज्यादा एक कवि और समीक्षक है। इसी कारण मौका मिलते ही उन्होंने अपनी बात काव्यात्मक ढंग में प्रस्तुत की है। नाटक की शुरूआत में ही लोकगायक मंगलाचरण गा रहा है उसका वर्णन -

"सिध्दि विनायक गौरी नंदन
नमन करूँ, लागूँ जी पाँय
हंसवाहिनी, वीणा धारिणी।
वर दो माता करो सहाय।"[50]

नाटक में व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग भी जगह जगह पर हुआ है। राजा भोज अपनी बेटी राजमती को वर ढूँढ़ने हेतु चारों दिशाओं में चार दूतों को भेज देते हैं। दक्षिण दिशा की ओर गया दूत बताता है कि राजा राव आठो पहर घोड़े पर ही बैठता है। यह बात सुनकर भोज उसे व्यंग्यात्मक भाषा में उत्तर देते हैं -

"भोज : वाह ! आठों पहर घोड़े पर बैठा रहता है। उसे वहीं बैठा रहने दो कविजी। (चौथे से) हाँ तुम

कहो, तुम कौनसा वर लाए हो ?''[51]

नाटककार श्रोत्रिय जी ने नाटक में जगह-जगह पर प्रादेशिक भाषा में लोकगीतों का प्रयोग किया है। पूरे नाटक में इस प्रादेशिक भाषा का प्रयोग दिखाई देता है।

''राजमती : (सखी के हाथ पर ताली देते हुए)

फूँदी को फड़ाको

जीया बाई को काको

सखी (एक) : (राजमती के हाथ पर ताली देते हुए)

काको लायो काकड़ी

काकी ने माँग्या बीज।

रामजती : (सखी दो के हाथ पर ताली देते हुए)

काका ने दी लात की

काकी ने गायो गीत।''[52]

दूसरे अंक की शुरूआत में ही श्रोत्रिय जी ने हास्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। राणी राजमती अभी किशोरी है। विवाह होने के बाद भी उसका बचपना अभी भी वैसा का वैसा है। इसका एक चित्र -

''बीसल : अब अजमेर की लक्ष्मी ही आपकी सखी है राणीजी !

राजमती : (मौन से देखती है) राजाजी, तुमने अपनी मूँछ नहीं मुड़वाई ?

बीसल : आपको अच्छी नहीं लगती ?

राजमती : (ओठों पर हाथ फेरते हुए, उदास) हमारे को मूँछ ही नहीं ?

बीसल : (हँसते हुए) नहीं, नहीं, हम पूछते हैं आपको हमारी मूँछे (हाथ फेरता है) अच्छी नहीं लगती ?

राजमती : थोड़ी भारी लगती हैं। (अभिनय सहित) इत्ता-सा मुँह और इत्ती बड़ी मूँछे ?''[53]

नाटक में कहीं-कहीं पर वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग भी दिखाई देता है। राजमती अपने पति बीसलदेव का वर्णन पंड़ित जी से कर रही है -

''राजमती : तो सुनो पंड़ित जी ! वह मेरे छोटे देवर सरीखा है, अंतर यह है कि यह गोरा है और मेरा 'वह' थोड़ा साँवला है। और भी सुनो - ''माथे पर तिलक बाल-सुरज सा दमकता है केश में केवडे की भीनी गंध आती है। उस चौड़ा, कटि पतली, कृपाण मचलती जटाँ, यम की दाढ-सी शत्रु को कँपाती है। ठुड्डी पर केश मँड़राते हैं भ्रमर जैसे तिल दाई आँख के कोए में सुहाता है नवलेख ऊँचे घोड़े पर सवार वीर, लाखों के बीच अलग पहचाना जाता है।'' अरे मेरा राजा ऐसा है कि भले मेले में भी आप उसे पहचान लोगे।''[54]

इस प्रकार प्रस्तुत नाटक में व्यंग्यात्मक, काव्यात्मक, हास्यात्मक, प्रादेशिक एवं वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग नाटककार ने सफलता से किया है।

4.6.3 'फिर से जहाँपनाह' - भाषा

'फिर से जहाँपनाह' श्रोत्रिय जी का अंतिम एवं प्रयोगशील नाटक है। इसमें नाटककार ने दो ही अंको की योजना की है साथ-साथ दो अंकों में अलग-अलग परिवेशों का चित्रण किया है। प्रथम अंक में नाटककार ने 21 वीं सदी का चित्रण किया है, फलतः इसमें बोलचाल की हिंदी का प्रयोग नाटककार ने किया है। दूसरे अंक में 18 वीं सदी का प्रयोग किया है इसी कारण इसमें तत्कालीन दरबारी भाषा का प्रयोग नाटककार ने किया है।

नाटक की शुरूआत में ही श्रोत्रिय जी ने काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। नाटक का सूत्रधार कबीर मंच के कोने में बैठा है और जुलूस कोरस गीत गाते हुए उसके नजदिक से जाता है -

"शहर में चंदा गाँव में लूट
टैक्स बढ़े नौ, दो की छूट।
महँगाई दस, सस्ता चार
रिश्वतखोरी की भरमार।
नेताजी का बड़ा कमाल
कत्ल करे खुद, खुद बेहाल।
छुट्टे चीते बंधक गाय
कौन सुनेगा अपनी हाय।"[55]

प्रस्तुत नाटक राजनीति और राजनेताओं पर केंद्रीत है। फलतः इसमें राजनीतिक परिवेश का चित्रण होना स्वाभाविक है। राजनीतिक भाषा का प्रयोग पूरे पहले अंक में किया गया है।

"त्यागमूर्ति : कहो भाई मंगलम कैसा चल रहा है विभाग ?
मंगलम : हमारे कारावास विभाग में तो मजे ही मजे है। आप अपने विभाग की बताओ।
त्यागमूर्ति : हमारा मंत्रालय भी बहुत तर चल रहा है।
मंगलम : किधर जा रहे हैं ?
त्यागमूर्ति : चक्रवर्ती जी के बंगले और आप ?"[56]

काव्यात्मक भाषा का प्रयोग नाटककार ने नाटक में किया है। पहले अंक में चक्रवर्ती की सरकार के गृह-वित्त मंत्री वर्मा संसद में बजेट पेश करते हैं। जिसमें पूँजीपतियों के लिए कोई छूट नहीं थी जो आम आदमी को

लक्ष्य करके बनाया गया था। चक्रवर्ती को यह बजट अपनी कुर्सी को धक्का पहुँचानेवाला नजर आता है -

"वर्मा : नए साल का बजट अनुमोदन के लिए लाया हूँ।

चक्रवर्ती : हाँ, बताएँ।

वर्मा : इस बजट में कम्प्यूटर, टी. वी., रेशमी कपडे, शराब सिगरेट जैसी विलासिता की चीजों पर सौ प्रतिशत टैक्स बढाने का प्रस्ताव है। इससे देश को पाँच हजार करोड़ की आय होगी, जिसे हम...

चक्रवर्ती : यतीमों में बाँटेंगे !"[57]

नाटक के दूसरे अंक में भी इसी व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। आलमशाह गुनहगारों को शिक्षा दे रहा हैं जहाँ कसुरवारों को बेकसूर और बेकसूरों को कसूरवार ठहराया जाता है। रिश्तेदारों को बक्शा जाता है ऐसे समय में बलवाई जिसका कोई कसूर नहीं, उसे फाँसी की सजा सुनाई जाती है। यहाँ पर शाह द्वारा व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है -

"मंगल : शाहआलम यह बेकसूर है !

शाह : (व्यंग से) तो ऽऽ (कड़ककर) फाँसी !

व्यक्ति : हुजूर मैं बेगुनाह हूँ ! हुजूर बलवे से मेरा कोई सरौकार नहीं ! हुजूर रहम कीजिए, हुजूर कल मेरा निकाह है।

शाह : (व्यंग्य से) जरूर होगा ! कासिम खान ! इसकी मुंड़ी बल्लम में पिरोकर ठीक वक्त पर दुल्हन के पास पहुँचायी जाए।"[58]

नाटक के दूसरे अंक में अठारहवीं शताब्दी का वर्णन हुआ है जिसमें दरबारी व्यवस्था का चित्रण है। इसी कारण इसमें दरबारी भाषा का प्रयोग हुआ है। आलमशाह और हाजरा अपनी शियासत को लेकर बातें करे रहे हैं -

"शाह : बड़ी बेतुकी तोहमतें लगाई जा रही हैं हम पर ! अरे हमने ढेरों फतहें रिआया की झोली में डालीं ? उसका सर दुनिया में उँचा उठाया।

हाजरा : मगर इससे उसे सुकून तो न मिला, पेट के गढ़े तो न भरे !

शाह : क्या बात करती हो ? हमारा खुफिया महकमा तो कहता है कि मुल्क में घी, दूध की नदियाँ बह रही है। लोग खुश है और शाहंशाह के तेहदिल से शुक्रगुजार हैं।"[59]

इसप्रकार प्रस्तुत नाटक में काव्यात्मक, व्यंग्यात्मक, राजनीतिक, दरबारी भाषा का प्रयोग हुआ है।

4.7 उद्देश्य

4.7.1 'इला'

नाटककार नाटक की रचना करने के पहले कुछ उद्देश्य सामने रखता है। बिना उद्देश्य के कोई भी साहित्यिक कृति लिखी नहीं जाती। उद्देश्य नाटक के तत्वों में से एक है। प्रस्तुत नाटक श्रोत्रिय जी ने स्त्री शोषण और लिंग-परिवर्तन की समस्या को लेकर लिखा है।

नाटककार का सबसे प्रमुख उद्देश्य सदियों से प्रताड़ित और शोषित नारी का चित्रण करना है। साथ ही साथ नारी किस प्रकार इन समस्याओं का सामना करती है इस बात को भी उन्होने चित्रित किया है।

इसके साथ पौराणिक ऋषी-मुनियों के तपोबल का गलत उपयोग तत्कालीन राजा किस प्रकार करते थे इच्छा न होकर भी उन्हें राजा के सामने किस प्रकार झुकना पड़ता था इस बात को भी उन्होने प्रकाशित किया है। श्रोत्रिय जी वशिष्ठ मुनि को आधुनिक विषारद के प्रतीक के रूप में चित्रित करते हैं।

पौराणिक काल में लिंग-परिवर्तन का सफल प्रयोग राजा मनु और वशिष्ठ मुनि द्वारा किया गया था। इसका उल्लेख 'भागवद पुराण' में मिलता है। आज 21 वीं सदी में विज्ञान ने इतनी उन्नति की है कि मानव लिंग-परिवर्तन जैसी घिनौनी हरकत भी कर सकता है। इस बात की ओर नाटककार ने इशारा किया है।

आज मानव नैतिकता को भूलता जा रहा है नई पीढ़ी के लोग तो व्यक्तित्वहीन और नैतिकता को भूलकर व्यवहार करते हैं। मानव प्रकृति को चुनौती दे रहा है। उसके खिलाफ घिनौने कृत्य कर रहा है। श्रोत्रिय जी कहना चाहते है कि प्रकृति हमेशा मानव से आगे रही है। वह समय-समय पर अपना भयंकर रूप दिखाती आई है। इसीलिए मानव को अपनी सीमा में रहकर व्यवहार करना चाहिए।

मनु जैसे सत्ताप्रमुख के हठवादी दृष्टिकोण को दिखाना यह एक उद्देश्य प्रतीत होता है। मनु एक राजा हैं इसी कारण वह मनोवांछित व्यवहार कर सकता है। मनु को अपने धर्म और राजनीति की फिक्र रहती है इसीलिए वह बेटी के बदले बेटा चाहते हैं मगर पुत्रकामेष्ठि यज्ञ सफल नहीं होता। इसी कारण वे वशिष्ठ जी को फिर से यज्ञ करवाने का आदेश देते हैं।

इस प्रकार श्रोत्रिय जी ने उपरयुक्त उद्देश्यों को सामने रखकर प्रस्तुत नाटक की रचना की है।

4.7.2 'साँच कहूँ तो' - उद्देश्य

प्रस्तुत नाटक प्रकाशन काल की दृष्टि से श्रोत्रिय जी का द्वितीय नाटक है। राजस्थानी में लिखे 'बीसलदेव रासो' इस काव्य को कथा का आधार बनाया है। प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु मध्यकालीन राजव्यवस्था

से संबंध रखती है, इसी कारण तत्कालीन परिवेश का चित्रण नाटक में हुआ है।

प्रस्तुत नाटक नारी की पीड़ा को चित्रित करता है। बीसलदेव एक राजा हैं। उन्होंने इंद्रावती नामक स्त्री से विवाह भी किया है फिर भी वह राजा भोज की पुत्री राजमती से विवाह करते हैं। राजा भोज की पुत्री राजमती प्रस्तुत नाटक की प्रमुख पात्र हैं। राजमती एक बालिका होकर भी उसका विवाह अधेड़ उम्र के राजा बीसलदेव के साथ किया जाता है। राजमती की अभी खेलने-दौड़ने की उम्र बाकी है। इसी कारण वह पहली मुलाकात में राजा को अपने साथ खेलने का आह्वान करती है। राजा बीसलदेव शूर-वीर होने के साथ घमंड़ी भी है। उसके घमंड़ को ठेस पहुँचाने का काम राजमती करती है। इसी कारण राजा बारह बरस तक उड़ीसा के राज्य में रहता है और राणी राजमती को बारह बरसों तक विरह सहन करना पड़ता है।

राणी राजमती की फटकार के कारण बीसलदेव उड़ीसा राज्य की ओर चला जाता है और लगभग बारह बरस तक वापस नहीं आता। इन बारह सालों में राणी राजमती के साथ-साथ राणी इंद्रावती को भी राजा का विरह सताता है। वह भी बीसलदेव की याद में रात-रात जागती रहती है। उसके विरह को, पीड़ा को दर्शाना भी नाटककार का उद्देश्य है।

नारी पीड़ा के साथ-साथ प्रस्तुत नाटक में राजा के संकुचित दृष्टिकोण तथा उसके घमंड़ी स्वभाव का भी चित्रण नाटककार ने किया है। राजा बीसलदेव शूर और पराक्रमी राजा है। वह अपने आपको भारतवर्ष का सबसे बलशाली राजा समझता है। उसके पास पर्याप्त नमक है। इस बात का राजा को घमंड़ है। राजा के इस घमंड़ को राजमती तोड़ने का काम करती है। बीसलदेव अपने-आपको चक्रवर्ती समझता था मगर राजमती उड़ीसा के राजा का जिक्र करती है साथ-साथ उसके पास हीरे होने का जिक्र भी करती है। राजा बीसलदेव हीरों की अभिलाषा लेकर उड़ीसा की ओर चला जाता है। इस प्रकार राजा बीसलदेव जैसे शासक के घमंड़ी स्वभाव का चित्रण करना यह नाटककार का उद्देश्य है।

बीसलदेव के घमंड़ी स्वभाव के साथ-साथ उसके स्वाभिमानी राजा होने का चित्रण भी नाटककार ने किया है। हीरों की खोज में राजा उड़ीसा राज्य चला जाता है पर राजमती को जो उसने बारह बरस तक वापस न आने का वचन दिया था उसका पालन राजा करता है। राजा के इसी स्वभाव का चित्रण नाटककार ने किया है।

नाटककार ने इस नाटक में 'अनमेल-विवाह' की प्रथा पर प्रहार किया है। लोकगायक और विदूषक के संवादों से बीसल और राजमती के अनमेल विवाह की प्रथा पर नाटककार ने प्रहार किया है। रानी राजमती किशोरी होने के बावजूद उसका विवाह अधेड़ उम्र के राजा बीसलदेव के साथ किया जाता है। मध्यकाल में यह प्रथा रूढ़ थी लेकिन बीसवीं सदी में भी यह प्रथा प्रचलित थी उसका पर्दाफाश करने हेतु श्रोत्रिय जी ने प्रस्तुत नाटक में टीका टिपण्णी की है।

4.7.3 'फिर से जहाँपनाह' - उद्देश्य

श्रोत्रिय जी ने पहले दो नाटकों में स्त्री समस्या और राजनेताओं की धनलोलुपता को लेकर बातचीत की है मगर उनका तृतीय नाटक 'फिर से जहाँपनाह' इससे बिल्कुल अलग है। श्रोत्रिय जी ने इसमें अलग प्रयोग किया है।

प्रस्तुत नाटक में उन्होंने राजनेताओं के भ्रष्ट व्यक्तित्व को आम पाठकों के सामने लाया है। ऐसे नेताओं के कारण ही हमारा लोकतंत्र भ्रष्ट एवं निकम्मा बन गया है। 21 वीं सदी में जीनेवाले अनंत चक्रवर्ती जो लोकतंत्र के मुखिया हैं और 18 वीं शती के आदमशाह एक तानाशाह है। श्रोत्रिय जी इन दोनों में अंतर महसूस नहीं करते।

आज अपने देश का प्रजातंत्र पूर्णतः से निकम्मा हो गया है। प्रजातंत्र चलानेवाले प्रजा के नेता एवं प्रतिनिधि आम जनता को फँसा रहे हैं। हर कोई अपना स्वार्थ साध लेने की जल्दी में हैं। राजनेताओं के आगे गांधी, नेहरू जैसे आदर्श व्यक्तित्व होकर भी वह अंधे हैं। देश का हर नेता कहीं न कहीं गुनहगारी से जुड़ा हुआ है। इन जैसे राजनेताओं के कारण ही प्रजातंत्र निकम्मा हो गया है। इस बात की ओर श्रोत्रिय जी इशारा करते हैं।

अनंत चक्रवर्ती और आदमशाह जैसे राजनेताओं की पोल खोलना प्रस्तुत नाटक का मुख्य उद्देश्य है। सत्ता में आनेवाली पार्टी लोगों को दिए हुए आश्वासनों को भूल जाती है। सबसे पहले वह अपने पक्ष के विस्तार हेतु प्रयासरत रहती है। उसे हर समय कुर्सी बचाने की चिंता रहती है। आदमशाह अपने शिवा दूसरे शासक को पनपने नहीं देता। इन जैसे राजनीतिज्ञों की पोल खोलना नाटककार का प्रमुख उद्देश्य है।

निष्कर्ष :–

किसी वस्तु के निर्माण के लिए आरंभ से लेकर अंत तक जो क्रिया-व्यापार किया जाता है प्रायः उसी को 'शिल्प' कहा जाता है। साहित्य में 'शिल्प' अलग दृष्टिकोण से प्रयुक्त किया जाता है। किसी उपन्यास, कहानी, नाटक आदि के तत्वों को लेकर 'शिल्प' का मूल्यांकन किया जाता है। प्रस्तुत अध्याय के तीनों नाटकों का 'शिल्प' उनके तत्वों के आधार पर किया गया है।

प्रभाकर श्रोत्रिय जी का पहला नाटक 'इला' के शिल्प का विवरण विस्तार से किया गया है। नाटक की कथावस्तु संक्षेप में कही गई है। इस कथावस्तु का आधार ग्रंथ भागवत पुराण है। नाटक के पात्रों का चरित्र-चित्रण विस्तार से किया गया है। उसमें मनु, श्रद्धा, वशिष्ठ मुनि, सुद्युम्न, सुमति आदि पात्र प्रमुख हैं। इसके अलावा विदुयाधर, चंद्रिका, दरबारी दासियाँ आदि लोगों का चरित्र-चित्रण भी किया है। नाटक में अनेक प्रकार के संवादों का प्रयोग किया गया है। उसमें नाटकीय संवाद, स्वगत कथन आदि बातों का जीक्र किया है। नाटक में पुराणकालीन परिवेश का चित्रण किया गया है। उसीके अनुरूप देशकाल और वातावरण का विवरण किया है।

प्रस्तुत नाटक में वर्णनात्मक, विवरणात्मक भाषा का प्रयोग किया है। इसी बात का भी सोदाहरण चित्रण किया है। नारी की पीड़ा को व्यक्त करना और राजनीतिज्ञों के मनमानी स्वभाव का पर्दाफाश करना यह प्रस्तुत नाटक का उद्देश्य है। इसी प्रकार इन्हीं छः तत्वों के आधार पर 'इला' इस नाटक के शिल्प को स्पष्ट करणे का प्रयास किया है।

श्रोत्रिय जी का दूसरा नाटक 'साँच कहूँ तो' राजस्थानी में लिखे काव्य 'बीसलदेव रासो' पर आधारित है। इसमें मध्ययुगीन परिवेश का चित्रण किया गया है। इसके पात्र भी उसी परिवेश के हैं राजा बीसलदेव, राणी राजमती, इंद्रावती, राजा भोज भानुमती, पंडित, उड़ीसा नरेश और उड़ीसा की महाराणी आदि प्रमुख पात्र हैं। इसके अलावा अन्य गौण पात्र जैसे - दरबारी, दासियाँ आदि पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है। प्रस्तुत नाटक में काव्यात्मक संवाद भी दिखाई देते हैं, स्वगत कथन भी कहीं-कहीं नजर आता है। संवादों में प्रवाहमय दिखाई देती है। नाटक में तत्कालीन परिवेश का चित्रण हैं। युद्ध, यात्रा आदि बातों का चित्रण किया गया है। नाटक की भाषा में राजस्थानी के शब्दों की भरमार है। लोकगीतों का भी समावेश दिखाई देता है। वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग भी कहीं-कहीं दिखाई देता है। मध्ययुगीन नारी की पीड़ा और तत्कालीन हिंदू राजा की वचनबद्धता को व्यक्त करना ये उद्देश्य लेखक के सामने हैं। इस प्रकार प्रस्तुत नाटक के शिल्प को भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

श्रोत्रिय जी का तीसरा नाटक 'फिर से जहाँपनाह' एक प्रयोगशील नाटक है। इसका कथानक मध्ययुगीन और आधुनिक परिवेश से बुना गया है। प्रथम अंक में 21 वीं सदी का चित्रण है तो दूसरे अंक में 18 वीं सदी का। इसमें राजनीतिज्ञों के भ्रष्ट व्यक्तित्व को सामने रखने का प्रयास किया गया है। नाटक के पात्र राजनेता हैं - अनंत चक्रवर्ती त्यागमूर्ति, मंगलम्, मिस्टर वर्मा आदि प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण किया है। दूसरे अंक के पात्र आदमशाह, नूरशाह, सिपहसालार असदुल्ला, मंगलसिंह, मलिका-ए-आलिया आदि प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है। सारे पात्र आज के भ्रष्ट नेताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। नाटक के संवाद बड़े हैं, कहीं-कहीं छोटे नजर आते हैं स्वगत कथन भी दिखाई देता है। नाटक के पहले अंक में ईक्कीसवीं सदी के परिवेश का चित्रण है तो दूसरे अंक में मध्यकालीन राज्यव्यवस्था का। नाटक में राजनीतिक भाषा का प्रयोग दिखाई देता है। दूसरे अंक में दरबारी भाषा दिखाई देती है। प्रस्तुत नाटक में श्रोत्रिय जी ने राजनीतिज्ञों की नीतियों का पर्दाफाश किया है साथ-ही-साथ लोकतंत्र की खिल्ली उड़ाने का प्रयास भी किया है।

इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय में नाटक के तत्वों के आधार पर तीनों नाटकों के शिल्प को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

संदर्भ संकेत

1. Oxford Dictionary of current English, पृ. 1258
2. संपादक - 'बृहद हिंदी कोश', पृ. 1334
3. संपादक - 'डॉ. दयाकुष्ण, विजय, मधुमति', अंक - 11, पृ. 8
4. प्रभाकर श्रोत्रिय - 'इला', पृ. 24
5. वही, पृ. 40
6. वही, पृ. 43
7. वही, पृ. 57
8. वही, पृ. 31
9. वही, पृ. 48
10. वही, पृ. 59
11. वही, पृ. 112
12. वही - 'साँच कहूँ तो', पृ. 33
13. वही, पृ. 32
14. वही, पृ. 61
15. वही, पृ. 39
16. वही, पृ. 22
17. वही, पृ. 19
18. वही, पृ. 76
19. वही, पृ. 37
20. वही, पृ. 18
21. वही, पृ. 52
22. वही, पृ. 75
23. वही, पृ. 80
24. वही - 'फिर से जहाँपनाह', पृ. 11
25. वही, पृ. 22

26. वही, पृ. 44
27. वही, पृ. 24
28. वही, पृ. 11
29. वही, पृ. 45
30. वही, पृ. 43
31. वही, पृ. 60
32. वही, पृ. 80
33. वही, पृ. 24
34. वही, पृ. 55
35. वही, पृ. 58
36. वही - 'इला', पृ. 50
37. वही, पृ. 24
38. वही, पृ. 82-83
39. वही - 'साँच कहूँ तो', पृ. 32-33
40. वही, पृ. 21
41. वही, पृ. 25
42. वही, पृ. 40-41
43. वही - 'फिर से जहाँपनाह', पृ. 10-11
44. वही, पृ. 46-47
45. वही, पृ. 56
46. वही - 'इला', पृ. 19-20
47. वही, पृ. 76
48. वही, पृ. 47
49. वही, पृ. 82
50. वही - 'साँच कहूँ तो', पृ. 15
51. वही, पृ. 23
52. वही, पृ. 25

53. वही, पृ. 32-33
54. वही, पृ. 66
55. वही - 'फिर से जहाँपनाह', पृ. 8
56. वही, पृ. 10
57. वही, पृ. 24
58. वही, पृ. 56-57
59. वही, पृ. 59